



श्री श्री 1008 संत सुरदास जी



श्री श्री 1008 बलरामदास जी

खण्डेलवाल महासभा पत्रिका

अखिल भारतवर्षीय
खण्डेलवाल वैश्य महासभा,
जयपुर का मुख पत्र



खण्डेलवाल समाज ध्वज



स्थापना - 1913

प्रगतिशील राष्ट्रीय हिंदी मासिक समाचार पत्र

www.khandelwalmahasabha.co.in

वर्ष : 22 | अंक : 7 | मार्च : 2020 | मूल्य : 20 रु. प्रति | प्रकाशन तिथि : 21 मार्च 2020
संस्था रजिस्ट्रेशन : S-16/1916 | वार्षिक शुल्क : 200 रुपये | आजीवन शुल्क (10 वर्ष) : 1000 रुपये



#COVID19GA

COVID-19

CORONAVIRUS DISEASE

Khandelwal Mahasabha Jaipur Issued an Advisory for Corona Virus Cure :

अ. भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा, गंगा मन्दिर, स्टेशन रोड, जयपुर
का सभी से विनम्र अनुरोध

‘नोवेल कोरोना वायरस’ से घबराये नहीं, सावधानियां अपनाये

प्रिय समाज बन्धुओं,

माताओं एवं बहनों, सप्रेम वन्दे

सभी को नवसंवत्सर-2077 की हार्दिक शुभकामनायें। नयासंवत् आपके जीवन में खुशियां लेकर आये, सभी सपरिवार तन-मन से स्वस्थ रहें एवं सकारात्मक सोच के साथ प्रगति की ओर बढ़ें।

जैसा कि आप सभी को जानकारी है कि कोरोना वायरस का संक्रमण भारत में भी हो चुका है। इसके संक्रमण से बचाव हेतु मेरा देशभर की सभी समाज संस्थाओं व संगठनों के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों से अनुरोध है कि अभी किसी भी प्रकार के सामुहिक कार्यक्रम आयोजित नहीं करें और ना ही किसी अन्य के सामुहिक आयोजन में जायें। कोरोना वायरस संक्रमण को रोकने के लिये जागरूकता के साथ अपना स्वयं का, परिवारजनों तथा स्नेही मित्रों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

- यथा संभव भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर जाने से बचें तथा मॉस्क का उपयोग करें।
- खाँसी, बुखार और सांस लेने में तकलीफ जैसे लक्षणों को नजर अंदाज नहीं करें।
- शीघ्र ही चिकित्सालय में डॉक्टर से संपर्क इलाज करवायें।
- नियमित रूप से अपने हाथ साबुन-पानी से धोयें एवं स्वच्छता का ध्यान रखें।
- किसी में भी संक्रमण के लक्षण होने पर सुरक्षित दूरी बनाये रखें।
- हाथ न मिलायें नमस्ते से काम चलायें।
- कोरोना वायरस से घबराये नहीं इसका बचाव ही उपचार है।

आपके स्नेही

रमेशचन्द्र गुप्ता नरेश रावत

अध्यक्ष प्रधानमंत्री

सम्पादक मण्डल

संरक्षक महासभा पत्रिका

• श्री रामसहाय खण्डेलवाल

वार्ड नं. 16 राजकीय अस्पताल के सामने,
मु.पो. खेरली (अलवर-राज.)
मो. 94149 86630, फोन नि. 01492-280500

प्रभारी

• श्री रामस्वरूप ताम्बी

खण्डेलवाल किराना एण्ड जनरल स्टोर, 5-ए
गोविन्दबाडी, एस.बी.बी.जे. के सामने, ब्रह्मपुरी,
जयपुर, मो. 99280 38372

सहप्रभारी

• श्री गोपाललाल नाटाणी

2/63 जवाहर नगर, जयपुर
मो. 94603 87066

• श्रीमती अनिता जसोरिया

पत्नी श्री नरेन्द्र जसोरिया, 84, सुभाष नगर, एन.ई.बी.,
नियर अगसेन सर्किल, अलवर, मो. 94142 31985

प्रधान सम्पादक

• श्री रामनिरंजन खण्डेलवाल

8/269 विद्याधर नगर, जयपुर
मो. 98293 72844

सम्पादक

• श्री कैलाश खण्डेलवाल

सी-241 सैक्टर-3, चित्रकूट स्कीम, अजमेर रोड,
जयपुर, मो. 94140 07197

महिला सम्पादक

• सुश्री लता खण्डेलवाल

37 अरिहन्त नगर, बाबा रामदेव मन्दिर के पास, मुहाना
मण्डी रोड, मानसरोवर, जयपुर, मो. 9672 77796

सह सम्पादक

• श्री भवनेश गुप्ता

एस-123, 80 फीट रोड, महेश नगर, जयपुर
मो. 98290 46012

मीडिया एवं विज्ञापन संयोजक

• श्री रमन खूंटेटा

1/1354, मालवीय नगर, जयपुर
मो. 94140 45571



गर्वासी देह अग्नि को समर्पित करने से पूर्व परिवारजनों, रिश्तेदारों एवं स्नेहीजनों द्वारा को बहुत शॉल मृतक को उढ़ाये जाने की प्रथा काफी लम्बे समय से चली आ रही है, लेकिन यह अनुपयोगी खर्चा किया जाना चला आ रहा है जिसका कहीं कोई शास्त्रोक्त उत्प्रेष नहीं मिलता है।

स्वर्गवासी को सभी रिश्तेदार अपनी ओर से लाये हुये शॉल उढ़ाकर अपने रिश्ते को निभाते हैं तथा यह समझते हैं कि उन्होने अपना दायित्व पूरा किया। मगर विचारणीय बात यह है कि यह शॉल फिर किसी काम का नहीं रहता है। ये शॉल प्रायः जिनका मूल्य 200 से 500 रु. तक होता है। श्मशान में सारे शॉल हटाकर अलग कर दिये जाते हैं तथा उनको फाड़ दिया जाता है जो किसी काम के नहीं रहते हैं।

काफी समय से चली आ रही इस प्रथा की अनुपयोगिता को देखते हुये इसे बदलने की अब आवश्यकता महसूस होने लगी है।

मृतक देह पर शॉल उढ़ाने के बजाय इसके बजाय वहां पर परिवार की इजाजत से सभी सगे संबंधियों से शॉल उढ़ाने के नाम पर रूपया लेकर गावों को गुड़, चारा खिलाने, पक्षियों को दाना डालने अथवा सारे रूपये एकत्रित करके गौशाला या किसी अनाथ आश्रम में दान दे देने चाहिये। जिससे शॉल के रूप में आये हुये रूपयों का सदुपयोग हो एवं इस प्रथा को रचनात्मक क्रियाशिलता में परिवर्तित किया जा सकता है।

यदि परम्परा को निभाना जरूरी लगता है तो ससुराल परिवार/पिहर पक्ष की ओर से केवल 2 शॉल मृतदेह को उढ़ाकर परम्परा का निर्वहन किया जा सकता है। इससे परम्परा का निर्वहन भी हो जायेगा और रूपये की बरबादी भी नहीं होगी तथा आत्मकल्याण का काम भी हो जावेगा।

यह विचारणीय विषय है। समाज को इस प्रस्ताव पर गहन गंभीरता के साथ मनन करना चाहिये। यदि सुझाव सही लगे तो समाज में बदलाव लाने के लिये पहल करें। इससे मृत आत्मा को शांति मिलेगी तथा रूपयों की बर्बादी की जगह उसका सही उपयोग होगा। मुझे विश्वास है कि अन्य समाज भी इससे अवश्य प्रेरणा लेंगे और अनुसरण करेंगे।

खण्डेलवाल दिवस एवं बसंत पंचमी की सम्पादक मण्डल की ओर से हार्दिक शुभकामनायें।

रामनिरंजन खण्डेलवाल (खूंटेटा)

प्रधान सम्पादक

खण्डेलवाल महासभा पत्रिका

8/269, विद्याधर नगर, जयपुर

मो. : 9829372844

E-mail : khandelwalmahasabha21@gmail.com



MURLIDHAR SONS & CO.
Wholesalers of All Kinds of Hand Tools, Hardwares & Machinery Items
Leading Supplier of Dal Mill, Flour Mill, Rice Mill, Oil Mill Spare Parts
84, Tripolia Bazar, Jaipur-302002, Tel.: (O) 2315294, 2311816 (R) 2335621

R.N. Khandelwal : 9829372844
Rajesh Khandelwal : 9929081575
Nihar Khandelwal : 9784618387



राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री रमेशचन्द्र गुप्ता (तूंगा वाले)

ए-31 से 34 विद्या नगर, जगतपुरा, जयपुर-302017
मो. 93145-66800/9887865550

मुख्य कार्यकारी अध्यक्ष

श्री विजय खण्डेलवाल

मै. खण्डेलवाल स्टील एण्ड पाईप्स 614 बोमिखल, कटकपुरी रोड,
भुवनेश्वर-751010 (उडीसा), मो. 98610 55750

प्रधानमंत्री

श्री नरेश रावत

544 डी.एल.एफ. टॉवर, शिवाजी मार्ग, मोती नगर, नजफगढ़ रोड, नई
दिल्ली-110015, मो. 98100 06182 फोन-011-40950000

कोषाध्यक्ष

श्री सियाराम खण्डेलवाल

डी-409 गेटोर रोड, सिद्धार्थ नगर, मालवीय नगर, जयपुर-302017
मो. 99290 97701

संयुक्तमंत्री कार्यालय

श्री रामकिशोर खूंटेटा

बी-503 गुमान इन्टरसिटी, सुभाष नगर, शास्त्री नगर, जयपुर-302016
मो. 98281 00277

कार्यकारी अध्यक्ष

श्री सुरेन्द्र बाजरगान

पुत्र स्व. श्री मोतीलाल खण्डेलवाल, खण्डेलवाल ज्वैल्स,
1216, चांदनी चैक, दिल्ली-110006, मो. 98110 81755

डॉ. अक्षय खण्डेलवाल

मै. खण्डेलवाल ट्यूब एण्ड इस्पात, 303 बोमिखल,
कटक रोड, भुवनेश्वर (उडीसा) पिन-751010, मो. 94370 53222

श्री कैलाशचन्द्र सराफ

28/1 पंजाबी बाग एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110026, मो. 98101 79783

श्री रमेशचन्द्र गुप्ता

(पूर्व प्रसिडेन्ट मंगलम् सीमेन्ट), 402 प्रिन्स अपार्टमेंट, ई-19 कौशल्या
मार्ग, गुलाब उद्यान के पास, बनीपार्क, जयपुर-302016 मो. 94141 88299

श्री महेश कुमार खण्डेलवाल

पुत्र श्री आर.डी. खण्डेलवाल, 30/73 न्यू आवडी रोड, किलापाक,
चैन्नई (तमिलनाडू) पिन-600010, मो. 9840097982

श्री रामावतार गुप्ता (खण्डेलवाल)

29/348, आशो पालव अपार्टमेंट,
नारायणपुरा टेलीफोन एक्सचेंज, नारायणपुरा विस्तार,
अहमदाबाद (गुजराज) पिन-380013, मो. 94267 25152



स्थापना - 1913

खण्डेलवाल वैश्य महासभा

गंगा मन्दिर, स्टेशन रोड, जयपुर, फोन : 0141 - 2372430 / 2374839

महासभा के कार्यक्रमों की पूर्ति हेतु मुक्त हस्त से दान दीजिये व दिलाइए और सहयोगी बनिये। संस्था को दिया गया दान आयकर की धारा 80-जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

नोट : बैंक या बैंक डाफ्ट “खण्डेलवाल वैश्य महासभा” के नाम से बनायें, अथवा “खण्डेलवाल वैश्य महासभा”

पंजाब नेशनल बैंक के चालू खाता नं. 2208000100226108, RTGS/NEFT/IFC, CODE: PUNB0220800

में राशि जमा करवाकर कार्यालय को फोन पर सूचना दें और आप द्वारा बैंक में जमा कराई गई राशि की बैंक स्लिप अपने पूर्ण नाम, पते के साथ लिखते हुए, कि आपने किस मद के लिये रुपया जमा करवाया है, महासभा कार्यालय को उपरोक्त लिखित पते पर अवश्य भिजवायें, ताकि आपको रसीद भिजवाई जा सके।

अखिल भारतवर्षीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा, जयपुर का मुख पत्र

खण्डेलवाल महासभा पत्रिका

प्रगतिशील राष्ट्रीय हिंदी मासिक समाचार पत्र

www.khandelwalmahasabha.co.in

वर्ष : 22 | अंक : 7 | मार्च : 2020 | मूल्य : 20 रु. प्रति | प्रकाशन तिथि : 21 मार्च 2020

संस्था रजिस्ट्रेशन : S-16/1916 | वार्षिक शुल्क : 200 रुपये | आजीवन शुल्क (10 वर्ष) : 1000 रुपये | प्रकाशन संख्या : 11,000

आजीवन मुख्य संरक्षक

- श्री रामेश्वरप्रसाद खण्डेलवाल (लवाण वाले)
जयपुर (राज.), मो. 98290 56741
- श्री लक्ष्मीनारायण धामाणी
जयपुर (राज.), मो. 94142 55968
- श्री आत्माराम गुप्ता (ARG Group)
जयपुर (राज.), मो. 98290 12800

प्रधान संरक्षक

- श्री सुरेश मेठी
नई दिल्ली, मो. 93122 15286

आजीवन संरक्षक

- श्री लेखराज खण्डेलवाल
दिल्ली, मो. 98710 03443
- श्री नरेन्द्र जसोरिया
अलवर (राज.), मो. 94140 18309
- श्री विनोद कुमार खण्डेलवाल
जयपुर (राज.), मो. 96020 75000
- श्री घनश्याम रावत
जयपुर (राज.), मो. 94142 54315
- श्री रमेशचन्द गुप्ता
सूरत (गुजरात), मो. 98251 46850
- श्री राजेश डंगायच
जयपुर, मो. 94140 73258
- श्री हेमन्त खण्डेलवाल
नई दिल्ली, मो. 98105 38240
- श्री अवधेश डंगायच
जयपुर, मो. 99283 02844
- श्री आकाश गुप्ता
जयपुर, मो. 98290 63223
- श्री लल्लूराम मोदी
जयपुर (राज.), मो. 93141 40402
- श्री मधुसुदन गुप्ता
जयपुर (राज.), मो. 94140 70141
- श्री हरीश मेठी
नई दिल्ली, मो. 98990 71118
- श्री राकेश खण्डेलवाल
जयपुर (राज.), मो. 94140 41652
- श्री गोविन्दशरण धामाणी
जयपुर, मो. 98292 51314

- श्री प्रकाशचन्द्र खण्डेलवाल (टटार)
नई दिल्ली, मो. 98103 20828
- श्री महेन्द्र कायथवाल
नई दिल्ली, मो. 098111 21642
- डॉ. श्री अनिल खण्डेलवाल [FCA, Ph.D]
नई दिल्ली, मो. 98181 41818
- श्री गोपालदास खण्डेलवाल
दिल्ली, मो. 93113 31576
- श्री रामवतार खण्डेलवाल (आमेरिया)
जयपुर, मो. 94142 07754
- श्री रामवतार गुप्ता (मामोडिया)
जयपुर, मो. 98290 08479
- श्री राकेश बडगोती
जयपुर, मो. 98290 09980
- श्री हनुमानसहाय गुप्ता (ओढ)
जयपुर (राज.), मो. 98290 13809
- श्री रामकिशन खण्डेलवाल (कायथवाल)
नागपुर (महा.), मो. 98222 24604
- श्री संदीप लाभी
नई दिल्ली, मो. 98110 82051
- श्री बाबू झालानी
अलवर (राज.), मो. 94140 17751
- श्री नरेन्द्र लाभी
कोटा (राज.), मो. 98290 37520
- श्री गोरधन घीया
कोटा (राज.), मो. 98290 38596
- श्री देवकीनन्दन खण्डेलवाल (ताम्बी)
कोटा (राज.), मो. 98290 35735
- श्री महावीर पीतलिया
कोटा (राज.), मो. 98290 37317

भूतपूर्व अध्यक्ष-आजीवन संरक्षक

- श्री कैलाश शाहारा
इन्दोर (म.प्र.), मो. 98260 99216
- श्री सुरेश गुप्ता 'विभव'
आगरा (उ.प्र.), मो. 9319125770
- श्री कालीचरणदास कौडिया
अजमेर (राज.), मो. 94140 03357
- श्री रामदास सौखिया
जयपुर, मो. 9829055552
- श्री रमेशचन्द बड़ाया
डोम्बीवली (ईस्ट), मो. 093232 87552

धीरा खण्डेलवाल, आईएएस साहित्य सेवाओं के लिए सम्मानित



श्री मती धीरा खण्डेलवाल, आई०ए०एस (1986) खेरली अलवर की पुत्रवधू है, व हरेरा के चेयरमैन डॉ. के.के. खण्डेलवाल, आई०ए०एस की धर्म पत्नी है। दोनों हरियाणा संवर्ग से संबंधित है। वे अपने सेवा काल में अंबाला जिलाधीश से लेकर अनेक महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर रही है तथा इन्हें इनके उत्कृष्ट प्रशासनिक कार्यों के लिये अनेक बार सम्मानित भी किया गया है।

इनके अब तक 14 काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं यथा - कदमों की लय, मुखर मौन, तारों की तरफ, नेह का दीप, माटी की महक, ओंस के मोती, सांझ सकारे, ख्यालों के खलियान, मन मुकुर आदि।

इनके इन काव्य संग्रह पर प्रख्यात साहित्यिक शमीम शर्मा का कहना है कि अपनी काव्य रचनाओं के लिए धीरा ने मीरा का बाना ओढ़ा है। संडे इंडियन पत्रिका द्वारा इनके लिये भारत की श्रेष्ठतम एक सौ एक कवयित्रियों में स्थान पाना गौरव की बात है। जहाँ कवितायें आज कल खत्म हो रही हैं, वहाँ धीरा ने कविता को बचाने का अच्छा प्रयास किया है। ये प्रशासनिक व्यवस्था की मोती है। हरियाणा के तत्कालीन मुख्य सचिव डी०एस०डेसी का इनकी काव्य रचना की प्रशंसा में कहना है कि यह प्रशासनिक व्यवस्था की मूर्ति है। हरियाणा के पूर्व राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सौलंकी का कहना था कि मैं धीरा खण्डेलवाल को उज्ज्वल मूर्ति के नाम से पुकारना चाहूंगा तथा इनकी काव्य रचना गागर में सागर भरने जैसी है।

इनकी काव्य रचनायें आम व्यक्ति के जीवन-प्रकृति-प्रेम-गरीबी-औरत की विडंबना-समाज के विरोधा भास आदि के सूत्रों से जुड़ी हुई हैं। इनका कहना है कि मुझे काव्य लेखन के लिये आम जीवन से प्रेरणा मिली है कि जो आस पास देखा वही लिखा। इन्होंने जापानी काव्य विधा हाइकूशैली का भी अपने काव्य में प्रयोग किया है। यह

शैली विश्व की सबसे छोटी काव्य विधा है।

धीरा खण्डेलवाल जैसी चिंतनशील अधिकारी का कवि होना किसी अचरज से कम नहीं है। इन्हें दिनांक 8.3.2020 को इनकी काव्य रचनाओं के उपलक्ष में निर्देशक भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा एक लाख रूपए के पुरस्कार के साथ प्रशस्ती पत्र पद देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने इनकी अद्भुत प्रशासनिक क्षमताओं के साथ काव्य के क्षेत्र में इनके गुरुतर योगदान की मुक्त कंठ से प्रशंसा की तथा इन्हें भविष्य का उज्ज्वल दीप बताया।

श्रीमती रेखा खूंटेटा, जयपुर अंतराष्ट्रीय माईत्री सम्मेलन में सम्मानित



अ खिल भारतीय मारवाडी महिला सम्मेलन में जयपुर प्रांत की अध्यक्ष एवं अ.भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सदस्य श्रीमती रेखा खूंटेटा को भव्या इन्टर्नेशनल एवं एन.आर.बी. फाउन्डेशन की ओर से आयोजित अंतराष्ट्रीय माईत्री सम्मेलन में सम्मानित किया गया। इस संस्था द्वारा विभिन्न क्षेत्र में मुकाम हासिल करने वाले कुछ विशेष लोगो समाज सेवा एवं नारी सशक्तिकरण के कार्य में उत्कृष्ट कार्यों के लिये सम्मानित किया गया।

सलोनी खण्डेलवाल, अलवर राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित

श्री रामचन्द्र मिशन हार्डफुलनेस एजुकेशन ट्रस्ट की ओर से अन्तराष्ट्रीय निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन सितम्बर-2019 में हुआ। इस प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर 17 हजार संस्थाओं के लगभग तीन लाख पैतालीस हजार विद्यार्थीयों ने भाग लिया। जिसका विषय था 'प्रेम विस्तार है, स्वार्थ संकुचक' जिसमें श्री जैन टी.टी. कॉलेज, अलवर की छात्रा सलोनी खण्डेलवाल



पुत्री श्री रामबाबू खण्डेलवाल (झालाणी) काला कूआ, अलवर निवासी ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। यह पुरस्कार 08 फरवरी, 2020 को हार्टफुलनेस ग्लोबल हैडक्वार्टर, हैदराबाद में वर्ल्ड चैंपियन पद्मश्री, पद्म विभूषण 'पी.वी. सिंधु' व श्री रामचन्द्र मिशन के प्रमुख 'दाजी' द्वारा छात्रा सलोनी खण्डेलवाल को प्रमाण पत्र व स्मृति चिन्ह व हीरक पुरस्कार प्रदान किया गया।

खण्डेलवाल वैश्य महासभा आपको शुभकामना प्रेषित करती है एवं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हैं।

श्री खण्डेलवाल वैश्य समाज समिति, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा बसंतोत्सव एवं स्नेह मिलन समारोह सम्पन्न

श्री खण्डेलवाल वैश्य समाज समिति, वैशाली नगर, जयपुर रजि. सं. 1134/जयपुर/2011-12 द्वारा दि. 26 जनवरी, 2020 को केसर कुन्ज मैरीज गार्डन, सिरसी रोड, जयपुर में बसंतोत्सव एवं स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें प्रतिभावान समाज बंधुओं एवं बच्चों द्वारा देश प्रेम पर आधारित मनमोहक रंगारंग कार्यक्रम सांस्कृतिक प्रभारी श्री अमित खण्डेलवाल, श्री सुनील गुप्ता एवं श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता के मार्गदर्शन में प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में प्रस्तुति देने वाले सभी प्रतिभागियों को संस्था द्वारा प्रशस्ति-पत्र एवं रणथम्भौर ऑप्टिशयंस द्वारा 1100/-रु. का गिफ्ट बाउचर भेंट किया गया। समारोह में समाज के गणमान्य व्यक्तियों में अखिल भारतीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र गुप्ता (तूंगा वाले), कार्यालय मंत्री श्री रामकिशोर खूटेटा, श्री रामरतन घीया, श्री उमेश गोटेवाला एवं श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री हनुमानसहाय गुप्ता (ओढ) ओर अध्यक्ष डॉ. दिनेश सेठी, महामंत्री श्री ओमप्रकाश झालानी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शंभूदयाल गुप्ता अपने सहयोगियों के साथ पधरें। श्री खण्डेलवाल वैश्य एजुकेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सोहनलाल ताम्बी, महामंत्री श्री मदनलाल खण्डेलवाल, श्री नारायणलाल बडाया एवं

हितकारिणी सभा के अन्तर्गत विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पधारकर समारोह की शोभा बढ़ाई। नगर निगम की स्थानीय पार्षद श्रीमती राखी राठौड ने भी समारोह में शिरकत की। समारोह में पधारे हुये सभी गणमान्यों का अध्यक्ष श्री सतीश कुमार गुप्ता, सलाहकार श्री ललितप्रसाद खण्डेलवाल, उपाध्यक्ष श्री हरीप्रकाश गुप्ता, श्री सी.पी.गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल, संयुक्त सचिव श्री लक्ष्मीकान्त गुप्ता, संगठन मंत्री श्री महेशचन्द्र गुप्ता, सांस्कृतिक मंत्री श्री अमित खण्डेलवाल, प्रचार-प्रसार मंत्री श्री रामकृष्ण टोडवाल, कार्यालय मंत्री श्री सुनील खण्डेलवाल एवं समस्त कार्यकारिणी द्वारा स्वागत किया गया। आयोजन में समाज के करीब 1500 बंधुओं ने समारोह का आनन्द लेते हुये भोजन प्रसादी ग्रहण की। अंत में संस्था के आजीवन संरक्षक श्री सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा सभी कार्यकर्ताओं एवं पधारे हुये आगंतुकों का धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया गया।

खण्डेलवाल महिला कोटा ने मनाया फागोत्सव



ख ण्डेलवाल महिला मण्डल कोटा द्वारा दिनांक 29.2.2020 को दाधिक भवन में फागोत्सव का कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया गया। अध्यक्ष कुसुम लाभो और सभी कार्यकारिणी सदस्यों ने पूजा अर्चना कर कार्यक्रम की शुरुआत की। कार्यकारिणी सदस्यों ने सभी महिलाओं का गुलाल का टीका लगा कर स्वागत किया। कार्यक्रम में राधा कृष्ण की झांकी सजाई गई। कार्यक्रम के अंतर्गत काल्पनिक नंदागांव गोकुल मथुरा वृंदावन बरसाना आदि बनाये गये जिसमें सभी महिलाएं लंहंगा ओढनी पहनकर सज-धज कर आईं। शिखा तांबी, जिया तांबी चारू, स्वाति, पायल, रश्मि राधा कृष्ण बनकर आईं और इनके द्वारा बहुत ही सुन्दर नृत्य की प्रस्तुति दी गई। फागोत्सव में भजन मण्डली द्वारा दी गई भजनों की शानदार प्रस्तुति ने सभी महिलाओं को झूमने पर मजबूर कर दिया तथा सभी ने नृत्य करने का भरपूर आनंद लिया। फाग के भजनों तथा फूलों की होली ने सभी का मन मोह लिया। इस अवसर पर लगभग 175 महिलाएं उपस्थित रही। इस कार्यक्रम में सुनीता केदावत, चंदा तांबी,

हेमा बूसर, रेखा, भारती किलकिल्या, वंदना सिंगोदिया, चंद्रकांता ठाकुरिया, निर्मला जंघेनिया, मूर्ति जंघेनिया ललिता बूसर ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में कार्यकारिणी सदस्य चन्दा तांबी, पूर्णिमा खण्डेलवाल, कौशल घीया, सीमा आंकड, मृदुला केदावत, अर्चना बूसर, सावित्री तांबी, बृजबाला सिंगोदिया, कीर्ति माणकबोहरा, अंजना नाटानी, मनोरमा खूटेटा, आदि उपस्थित रही। कार्यक्रम के अंत में प्रसाद का वितरण किया गया और अर्चना बूसर की ओर से ठंडाई पिलाई गई। अंत में सचिव सुनीता केदावत ने सभी का आभार व्यक्त किया।

श्री खण्डेलवाल वैश्य समाज नदबई में नवनिर्मित संत सुन्दरदास हॉल का लोकार्पण एवं प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित



स्था नीय खण्डेलवाल वैश्य समाज भवन, नदबई में प्रातः 8'00 बजे हवन का आयोजन किया गया। तदोपरान्त महाआरती कर प्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री भगवानदास बम्ब-कुम्हेर (प्रमुख व्यवसायी) एवं अध्यक्ष श्री अनिल लोहिया महामंत्री जिला वैश्य समाज भरतपुर के सानिन्ध्य मे नदबई समाज की संचय निधि एवं समाज के भामाशाह केशवदेव बम्ब रिटायर्ड नायब तहसीलदार, महेशचन्द्र बम्ब पूर्व अध्यक्ष, श्री घमण्डीलाल बम्ब पूर्व अध्यक्ष, मोहनलाल बम्ब, अशोक

कुमार बम्ब, कृष्ण कुमार बम्ब, ललित प्रसाद मेठी, गिरधारीलाल मेठी, प्रदीप कुमार बम्ब, नारायणलाल मेठ, प्रेमराज पाबूवाल, निरन्जनलाल कायथवाल, मोहनलाल मेठी, चन्द्रप्रकाश सोनू बम्ब, रमेशचन्द्र बम्ब, भजनलाल मेठी, सुभाषचन्द्र बम्ब, जगदीशप्रसाद भदीरा वाले, पांचौराम धोंकरिया के सहयोग से 35 गुण 35 वर्गफुट में नवनिर्मित संत श्री बलरामदास हॉल का फीता काटकर लोकार्पण किया गया।

स्थानीय समाज द्वारा मुख्य अतिथि अध्यक्ष विशिष्ट अतिथियों का स्वागत सम्मान माल, फेंटा, प्रतीक चिन्ह, शॉल उढाकर किया गया। समाज अध्यक्ष श्री केशवदेव बम्ब का माला, फेंटा, शॉल उढाकर सम्मान किया गया। समाज की प्रतिभाओं का सम्मान प्रज्ञा, निशान्त, लक्षिता, हर्षिता, योगिता, पौरुष का नदबई समाज के पूर्व अध्यक्ष श्री घमण्डीलाल बम्ब की तरफ से किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा अपने सम्बोधन में समाज में व्याप्त कुर्रतियों को दूर करने, समाज उत्थान तथा समाज में एकजुट रहने बाबत विचार व्यक्त किये। अध्यक्ष द्वारा अपने सम्बोधन में भवन निर्माण की प्रशंसा करते हुये इसी अनुसार भवन का विकास कराते रहने का सुझाव दिया। इस अवसर पर भामाशाहो के अलावा केशवदेव महरवाल, हीरालाल, राजेश महरवाल, भगवानसहाय, रामबाबू, महेशचन्द्र, जगदीश महरवाल, उमेश पाटोदिया, आशुतोष उपस्थित रहें। समारोह में अग्रवाल समाज कटरा, नदबई के अध्यक्ष, मंत्री एवं महिला मण्डल एवं युवा मण्डल के अध्यक्ष, मंत्री सहित समाज के करीब 250 बंधु उपस्थित रहें। समाज अध्यक्ष श्री केशवदेव द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सभी का आभार व्यक्त किया एवं मंच संचालन मंत्री श्री शान्तिस्वरूप गुप्ता द्वारा किया गया। सामुहिक सहभोज के साथ शान्तिपूर्वक कार्यक्रम संपन्न हुआ।

श्री खण्डेलवाल वैश्य समाज समिति वैशाली नगर, जयपुर द्वारा बसंतोत्सव समारोह सम्पन्न

श्री खण्डेलवाल वैश्य समाज समिति, वैशाली नगर, जयपुर रजि. सं. 1134/जयपुर/2011-12 द्वारा दि. 29 जनवरी, 2020 के.वी.जी.आई.टी. कॉलेज प्रांगण में खण्डेलवाल दिवस-बसंत पंचमी उत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

जिसमें दीप प्रज्वलन कर माँ सरस्वती की पूजा अर्चना कर भजन प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम में उपस्थित सभी समाज बंधु एवं के.वी.जी.आई.टी. कॉलेज के स्टॉफ एवं समस्त बालिकाओं ने भाग लिया। तदुपरांत केसरिया दूध जलेबी का प्रसाद ग्रहण किया गया। संस्था के अध्यक्ष श्री सतीश कुमार गुप्ता द्वारा बताया गया कि समाज संस्था द्वारा के.वी.जी.आई.टी. कॉलेज की सहभागिता से 8 वर्षों से अविरल यह उत्सव मनाया जा रहा है।

खण्डेलवाल वैश्य समाज लक्ष्मणगढ का बसन्तोत्सव एवं उपखण्ड स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न

खण्डेलवाल वैश्य समाज लक्ष्मणगढ (अलवर) द्वारा मोदी क्रान्तिचन्द्र एडवोकेट-अध्यक्ष खण्डेलवाल वैश्य शिक्षण समिति, लक्ष्मणगढ के 91 वें जन्मदिवस 1 मार्च, 2020 को बसन्तोत्सव एवं उपखण्ड स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह बड़े उत्साह से आयोजित किया गया। जिसमें समाज के बाहर से पधारे हुये विशिष्ट अतिथियों द्वारा सम्बोधन व उद्बोधन हुआ। इस उत्सव में प्रातः से शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें खण्डेलवाल बंधुओं व महिलाओं की भारी संख्या में उपस्थिति रही।

समारोह में मोदी क्रान्तिचन्द्र एडवोकेट ने खण्डेलवाल समाज द्वारा किये गये विकास कार्यों पर प्रकाश डाला एवं भविष्य में की जाने वाली योजनाओं के बारे में अवगत कराया। लक्ष्मणगढ में समाज के प्रयत्नों द्वारा 10 एकड़ में स्थापित शिक्षण संस्थान का सन् 1981 में श्रीराम जी गोटेवाला पूर्व मंत्री राजस्थान द्वारा शिलान्यास किया गया था एवं मोदी बाबू प्रसाद के परिवार द्वारा सरस्वती की मूर्ति स्थापित की गई थी। इसी प्रांगण में खण्डेलवाल भवन ट्रस्ट द्वारा संत सुन्दरदास जी मूर्ति स्थापना की गई। इसी 10 एकड़ के शिक्षा संस्थान में 6 वर्ष पूर्व बाबा रामदेव ने भी समाज को दिशा निर्देश दिये। इस विशाल संस्थान के प्रांगण में ही बसन्तोत्सव समारोह का आयोजन हुआ जिसके पश्चात सामुहिक भोजन का आयोजन दोनों समय किया गया एवं विशिष्ट उपलब्धियों प्राप्त छात्र-छात्राओं को पारितोषिक प्रदान किये गये। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री रमेशचन्द्र खण्डेलाल, फरीदाबाद अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय खण्डेलवाल वैश्य वेलफेयर एसोसियेशन, श्री योगेशचन्द्र बडाय अध्यक्ष खण्डेलवाल सेवा संगठन अलवर, एवं विशिष्ट अतिथि श्री नरेन्द्र जसोरिया, श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल, श्री कैलाशचन्द्र घीया, श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल, श्री राधेश्याम खण्डेलवाल, श्री हरीप्रसाद खण्डेलवाल, श्री अनिल बजाज, श्री मुकेश खण्डेलवाल, श्री भगवानसहाय खण्डेलवाल, श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल, श्री दीपक खण्डेलवाल उपस्थित हुये।

खण्डेलवाल महिला मंडल, अहमदाबाद द्वारा फागोत्सव -2020 का आयोजन

अहमदाबाद प्रेम दरवाजा स्थित श्रीराम जी मंदिर के प्रांगण में दिनांक 07 मार्च शनिवार को सांयकाल 2 बजे से महिला मंडल के तत्वावधान में भव्य फागोत्सव का आयोजन किया गया।



बबली शर्मा भजन मंडली की प्रस्तुति 'होली आई रे कन्हाई रंग बरसे, सुना दे जरा बाँसुरी' से फागोत्सव का आगाज हुआ। ढप-चंग की थाप पर सभी समाज की महिलाओं ने जमकर फाग खेला। महिला मंडल द्वारा ईशा सेठी को श्रीकृष्ण एवं भावना सेठी को राधारानी जी की मनभावन झाँकी के रूप में प्रस्तुत किया गया। श्रीकृष्ण-राधा संग सभी ने परस्पर फूलों एवं गुलाल से होली खेल भक्तिमय कार्यक्रम का लुप्त उठाया। मंडल की सदस्यों ने श्रीकृष्ण की बाल लीला भजनों में गायी एवं नृत्य किया। महिला मंडल द्वारा अभी अधिकांश विश्व के साथ भारत में फैल रहे जानलेवा कोरोना वायरस के गंभीर परिणामों पर चर्चा कर उससे बचाव के तरीकों पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने अल्पाहार-प्रसादी का आनंद लिया। खण्डेलवाल महिला मंडल की कार्यकारिणी सदस्य मीना मामोडिया, हिरल कट्टा, मंजू भीवाल, नीलम ताम्बी, नेहा कट्टा, भावना सेठी, सीमा सेठी, रंजना सहारिया, अनिता केदावत एवं कलावती केदावत का योगदान प्रशंसनीय रहा।

श्री खण्डेलवाल वैश्य भवन ट्रस्ट, बीकानेर होली एवं प्रतिभा सम्मान समारोह



खण्डेलवाल समाज बीकानेर का होली व वसन्त प्रतिभा समारोह जिला उधोग संघ रानी बाजार में सांय 4:00 बजे से रविवार को खण्डेलवाल वैश्य भवन ट्रस्ट के तत्वावधान में किया गया। शुरुआत दीप प्रज्ज्वलित करके गणेश वन्दना से की गई। इसमें खेल-कूद, सांस्कृतिक प्रोग्राम, वृद्धजनों का सम्मान, विशेष पद प्राप्त करने वाले व सेवा निवृत्त होने वाले तथा 25 वी तथा 50 वी विवाह की साल गिरह वालों का सम्मान किया गया। भाग लेने वालों को 55 पुरूस्कार व 5 सरप्राईज पुरूस्कार वितरित किये गये।

खेलकूद में महिलायें व पुरूषों की अलग-अलग से म्युजिकल चेरर, नीबू दौड व बच्चों की दौड आदि प्रतियोगितायें करवाई गई। सांस्कृतिक प्रोग्राम में फैन्सी ड्रेस, महिलाओं व बच्चों के नृत्य, गाने व कविताओं में विशेषतौर पर सफाई अभियान व पौलिथिन बन्द करने, पुरूषों में सबसे वरिष्ठ व संरक्षक श्री रामकिशोर रावत का माला व शॉल तथा श्रीफल देकर सम्मानित किया गया तथा रावत साहब नें अपने उद्बोधन में महिला शक्तियों को आगे आने का व समाज के विकास पर प्रकाश डाला। श्रीमती गायत्री देवी व जगदीश जी राजोरिया की 50 वी सालगिरह पूर्ण करने वाले तीन अन्य जोड़ों का भी सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. आर.पी.गुप्ता ने अपने विचार समाज को अपने उधोग धन्धे लगाने व विकास करने के लिये प्रेरित किया। विशिष्ट अतिथि डॉ. राकेश रावत ने अपनी देश भक्ति की कविता बहुत ही अच्छे शब्दों में सुनाई। सचिव सुरेश रावत ने समाज की वार्षिक गतिविधियों के बारे में बताते हुये समाज को आगे बढ़ाने के लिये प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि श्री रामावतार जी बम्ब व मुख्य अतिथि श्री डॉ. आर.पी.गुप्ता तथा उधोग संघ के प्रबन्धक श्री पंचारिया जी का बहुत सम्मान किया गया। अन्त में अध्यक्ष श्री बनवारीलाल रावत ने सभी महानुभावों को प्रोग्राम में पधारने पर व समाज के विकास में सहयोग करने के लिये धन्यवाद दिया व आगे भी सबका साथ व सबका का विकास करने पर कहते हुये स्वरूची भोजन करने के लिये आमन्त्रित किया।

श्रद्धाजंली

भगवानसहाय कानूनगो (स्वतन्त्रता सेनानी) का स्वर्गवास

महासभा के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष श्री महेश कानूनगो, जयपुर के पिता श्री भगवानसहाय कानूनगो (स्वतन्त्रता सेनानी) का 104 वर्ष की आयु में दि. 20 फरवरी, 2020 को निधन हो गया। श्री भगवानसहाय जी कानूनगो का अंतिम संस्कार, जयपुर में पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया गया। पूर्व मुख्य सचेतक श्री महेश जोशी, कलेक्टर श्री जोगाराम ने पार्थिव देह पर पुष्प चक्र चढाया तथा जिला प्रशासन एवं पुलिस के अधिकार मौजूद रहें। बैठक में अ.भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र गुप्ता एवं स्थानीय पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने पहुँचकर भावभीनी श्रद्धाजंली अर्पित की।



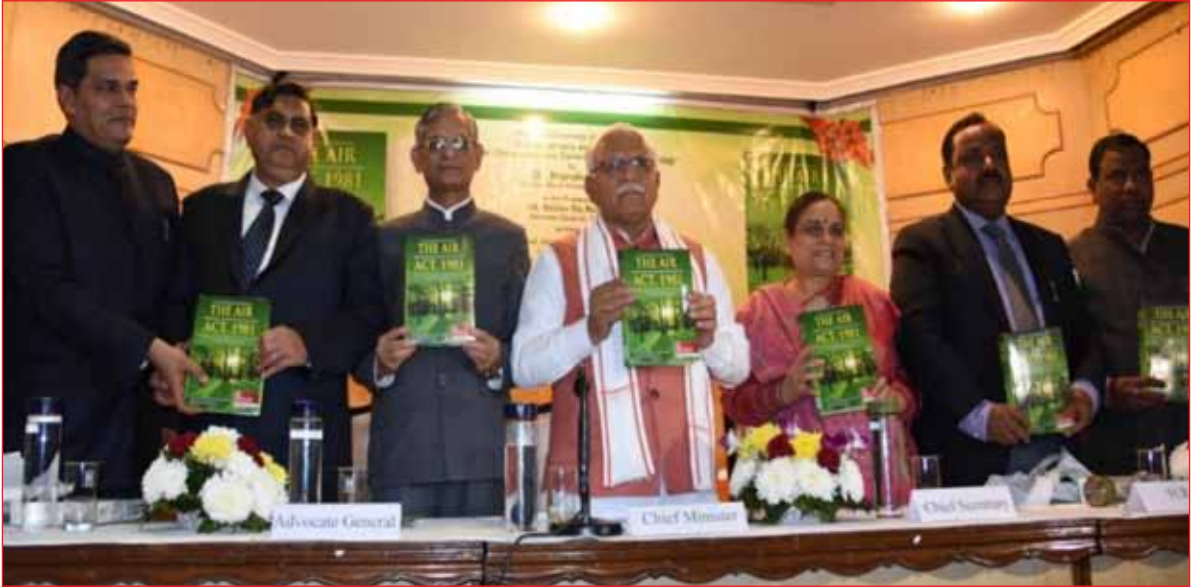
द्वारका प्रसाद खण्डेलवाल का स्वर्गवास

समाजसेवी कैलाश खण्डेलवाल एवं खण्डेलवाल समाज सिल्लोड (महाराष्ट्र) के अध्यक्ष विकास खण्डेलवाल के पिता श्री द्वारका प्रसाद खण्डेलवाल का 79 वर्ष की आयु में विगत दिवस निधन हो गया।

श्रीमती बादामी देवी का स्वर्गवास

महासभा के आजीवन संरक्षक श्री राजेश डंगायच की माताजी श्रीमती बादामी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री नन्दकिशोर डंगायच, विधाधर नगर, जयपुर का अस्मयिक निधन दि. 13 मार्च, 2020 को हो गया। पुलिस तपशील से ज्ञात हुआ कि आपके यहाँ दो वर्ष पूर्व कार्यरत नौकर ने माताजी के पहने हुये गहने के लालच में आकर उनकी हत्या कर दी। आप धार्मिक कार्यों में विशेष रुची रखने वाली मृदुभाषी महिला थी। आपकी शोक सभा में महासभा अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र गुप्ता तूंगा वाले सहित स्थानीय पदाधिकारी एवं कार्यसमिति सदस्य पहुँचे तथा भावभीनी श्रद्धाजंली अर्पित की। अ.भा खण्डेलवाल वैश्य महासभा प्रभु से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा की आत्मिक शांति तथा शोक संतप्त परिवारजनों को इस बिछोह को सहन करने का शक्ति प्रदान करें।





डॉ. के.के. खण्डेलवाल (आई.ए.एस.) की पुस्तक द एयर (प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ पॉल्यूशन) एक्ट 1981 का विमोचन

डॉ. के.के. खण्डेलवाल (आई.ए.एस.), चेअरमैन हरेरा ने अपने शैक्षिक जीवन में प्रतिभाशाली छात्र का परिचय दिया है। वह 1985 बैच के हरियाणा संवर्ग के आई.ए.एस. व खेरली, अलवर के निवासी हैं। इन्होंने 23 से अधिक विषयों में प्रथम श्रेणी में बरियता क्रम से परीक्षा उत्तीर्ण की है। यह तीन विषयों में पी.एच.डी. तथा 5 विषयों में एम.बी.ए. है। इनका अब तक का सम्पूर्ण कार्यकाल जन सेवा के लिए समर्पित रहा है। चण्डीगढ़, फरीदाबाद में कलैक्टर पद पर आपका सेवाकाल आपकी स्वर्णिम कार्यशैली का परिचायक है। वर्तमान में ये भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के राष्ट्रीय मुख्य आयुक्त पद को भी सुशोभित किए हुए है। आपकी देश व विदेशों की यात्राएं इनके प्रशासनिक ज्ञान वृद्धि का आधार बनी इन्होंने 500 से अधिक व्यक्तियों को रोजगार दिलाने में मुख्य भूमिका निभाकर उनकी आशा का दीप प्रज्वलित किया है।

सीनियर आईएएस ऑफिसर के.के. खण्डेलवाल ने 19 साल की उम्र में मैनेजमेंट पर अपनी पहली किताब लिखी थी। यह किताब आज भी मैनेजमेंट स्टडीज में एक टेक्स्ट बुक के तौर पर पढ़ाई जाती है। जोधपुर यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर बीसी पुनिया के साथ लिखी किताब 'प्रोजेक्ट प्लानिंग एंड कंट्रोल विद पार्ट एंड सीपीएम' के साथ खण्डेलवाल का लिखने का ये सफर 4 दशक से जारी है। 1982 में आई इस पहली किताब के अब तक 25 संस्करण आ चुके हैं।

वे लगातार मैनेजमेंट, इंजीनियरिंग, इकोनॉमिक्स, कल्चर, लॉ आदि अलग-अलग विषयों पर 32 से अधिक किताबें लिख चुके हैं तथा इनका पूरा प्रयास रहता है कि पाठक जटिल विषयों को आसानी से समझकर उन्हें अपने हित में उपयोग कर सकें।

द एयर (प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ पॉल्यूशन) एक्ट 1981 उनकी 32 वीं किताब है। इस पुस्तक का विमोचन हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी ने दिनांक 7 फरवरी को हरियाणा निवास, चण्डीगढ़ में किया। मुख्यमंत्री ने विषय-चयन पर डॉ. के.के. खण्डेलवाल की प्रशंसा की व कहा कि पुस्तक में प्रदूषण रोकने के लिए बनाए गए कानून अथवा नियम की व्याख्या की गई है, जिससे पाठक जागरूक होंगे। इस अवसर पर बहुत बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति के साथ हरियाणा के एडवोकेट जनरल बलदेव राज महाजन, पुरातत्व एवं संग्रहालय राज्य मंत्री अनूप धानक, मुख्य सचिव श्रीमती केशनी आनंद अरोड़ा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव राजेश खुल्लर, वित्त आयुक्त धनपत सिंह कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमती धीरा खण्डेलवाल सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

एक कवि की यह पंक्तियां इनके ऊपर कितनी सार्थक है:-

इस पथ का उद्देश्य नहीं है शांति भाव से चुप रहना।

किंतु पहुंचना उस सीमा तक जिससे आगे राह नहीं।

श्रीमती माया खण्डेलवाल को दौसा जिला उपभोक्ता संरक्षण की सदस्या नियुक्त

राज्य सरकार ने श्रीमती माया खण्डेलवाल पत्नी श्री डॉ. एस.एन. खण्डेलवाल-दौसा को जिला उपभोक्ता संरक्षण मंच में माननीय सदस्य नियुक्त किया है। आपकी नियुक्ति पर दौसा जिला खण्डेलवाल वैश्य सेवा समिति के पदाधिकारियों ने शुभकामनायें व्यक्त की तथा खण्डेलवाल स्मारक समिति दौसा ने आपको शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। महासभा अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र गुप्ता एवं अन्य पदाधिकारियों ने भी आपकी इस नियुक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त की एवं शुभकामनायें दी।



डॉ. एस.एन. खण्डेलवाल-दौसा द्वारा राजकीय उच्च मा. विद्यालय, सैंथल (दौसा) में विज्ञान भवन का निर्माण

डॉ. एस.एन. खण्डेलवाल ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सैंथल (दौसा) में एक विज्ञान भवन का करीब दस लाख रूपयों की लागत से निर्माण करवाया है।

यह निर्माण आपने अपनी अपने पिताजी श्री रामनिवास जी मामोडिया एवं माताजी श्रीमती नारायणी देवी की पावन स्मृति में करवाया। दि. 26 फरवरी, 2020 को विद्यालय में नवनिर्मित इस विज्ञान भवन के उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें भामाशाह डॉ. एस.एन. खण्डेलवाल एवं उनकी पत्नी श्रीमती माया खण्डेलवाल ने विज्ञान भवन का फीता काटकर उद्घाटन किया। डॉ. एस.एन. खण्डेलवाल ने अपने उद्बोधन में छात्रों को पढ़ाई के प्रति जागरूक रहने, संस्कारवान बनने व आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर समारोह में अनेक समाज के प्रतिष्ठित नागरिक तथा सैंथल ग्राम के गणमान्य नागरिक एवं शिक्षा अधिकारी मौजूद

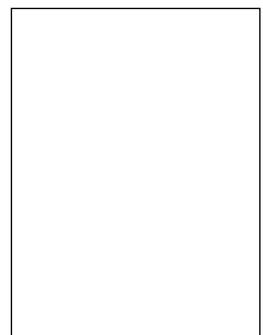


थे। दौसा जिला कांग्रेस कमेटी के जिला अध्यक्ष श्री रामजीलाल ओढ, खण्डेलवाल स्मारक समिति के संरक्षक डॉ. ओ.पी. गुप्ता, अध्यक्ष पूर्व शिक्षा अधिकारी श्री बनवारीलाल बडाय्या, पूर्व शिक्षा अधिकारी श्री रामगोपाल शर्मा, पूर्व प्रधान रामप्रताप मीणा, दौसा प्रधान श्री डी.सी. बैरवा, नगरपालिका के पूर्व चेयरमैन श्री भैया भाई, श्री जगदीश घीया, श्री सीताराम जी छोकरवाडा, डॉ. अनमोल खण्डेलवाल, निशा खण्डेलवाल, डॉ. मेघा खण्डेलवाल ने विचार व्यक्त किये एवं सराहना की। समारोह की अध्यक्षता श्री विनोद बिहारी पूर्व सदस्य राजस्थान लोक सेवा आयोग ने की। इस निर्माण कार्य की श्री घनश्याम रावत, श्री कैलाशचन्द्र गुप्त-बडोली, श्री सत्यनारायण बीमवाल, श्री भगवानसहाय रावत-टोरडा, श्री रामबाबू झालानी, श्री छगनलाल जंघीनिया, श्री अशोक बिशनपुरा, श्री मोहन खूटेटा, श्री रामगोपाल शर्मा, गुरुजी काबलेश्वर आदि ने इस पुनीत कार्य के लिये हार्दिक प्रशंसा व्यक्त की।

अखिल भारतीय नाटाणी परिवार समिति के निर्विरोध चुनाव सम्पन्न में श्री गोपाललाल नाटाणी अध्यक्ष तथा श्री कैलाशचन्द्र नाटाणी महामंत्री बने

चुनाव अधिकारी श्री रामस्वरूप ताम्बी द्वारा अखिल भारतीय नाटाणी परिवार समिति के चुनाव सम्पन्न कराये गये जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोपाललाल नाटाणी, महामंत्री श्री कैलाश चन्द्र नाटाणी, उपाध्यक्ष श्री रामस्वरूप नाटाणी, श्री मुरारी लाल नाटाणी, श्री रमेश नाटाणी, संयुक्त मंत्री श्री सुधीर नाटाणी, श्री कमलेश नाटाणी, श्री नीरज नाटाणी, कोषाध्यक्ष सी.ए. श्री अंकित नाटाणी, संगठन मंत्री श्री दिनेश नाटाणी, प्रचार मंत्री श्री गोविन्द नाटाणी, कार्यालय मंत्री श्री पंकज नाटाणी को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया।

निर्विरोध चुनाव सम्पन्न करवाने में निवर्तमान अध्यक्ष श्री श्याम नाटाणी, महामंत्री श्री विनोद नाटाणी, उपाध्यक्ष श्री ताराचन्द्र नाटाणी एवं समाज सेवी श्री गोविन्द नाटाणी का महत्ती भूमिका रही।





पारिवारिक स्नेह-संबंध क्या टूट ही जायेंगे?



■ डॉ. डी.पी. चीया
जोधपुर

आज तक प्रायः यह देखा जाता है कि परिवारों में उतना प्रेम व स्नेह नहीं रह रहा है। पारिवारिक संबंधों में बिखराव व मन-मुटाव बढ़ता जा रहा है। वैसे देखा जाय परिवार एक प्रकार से मनुष्य का सामाजिक शरीर ही हैं। जैसे शरीर के एक भाग को सुखी और समुन्नत बनाने के लिये शरीर के दूसरे भाग में कोई कमी नहीं रहने देते और सारे अवयव एक दूसरे की उन्नति से लाभ उठाते हैं, यही आधार कुटुंब का भी होता है। कुटुंब का असर पड़ोस पर, पड़ोस का असर शहर पर, शहर का असर राज्य पर व राज्य का असर पूरे राष्ट्र पर पड़ता है। यह बात तो हमें मान लेनी चाहिये कि माता अपना जीवन रस निचोड़कर बच्चे का शरीर बनाती हैं और उसे पालती-पोसती हैं। पिता अपनी कमाई को स्वयं कष्ट में रहकर भी बच्चों के लिये खर्च करता है और जमा पूंजी को उत्ताराधिकार के रूप में उन्हीं को सौंप जाता है। भाई-भाई हाथ की उंगलियों की तरह मिल-जुलकर काम करते हैं। पति-पत्नि आपस में एक गाड़ी के दो पहियों के समान इतने घुल जाते हैं कि एक प्राण दो शरीर का उदाहरण बनते हैं। संता अपने माता-पिता को ब्रह्मा-विष्णु के समान पूज्य मानती हैं। बहन-भाई का साथ तो अलौकिक ही रहता है। इस प्रकार के स्नेह संबंध से, इकट्ठी शक्ति से आर्थिक एवं सामाजिक लाभ अत्यधिक होता है। इस तरह के संगठन की छाया में परिवार के सभी सदस्य बच्चे, बूढ़े, विधवायें एवं आयोग्य व्यक्ति भी आनन्द

पूर्वक अपना समय व्यतीत करते हैं।

जहाँ संकीर्ण स्वार्थपरता रहती है, वहाँ अविश्वास अवश्य होता है। अविश्वास भी एक प्रकार की नास्तिकता ही है, क्योंकि यह मानना कि मैं स्वयं तो किसी भी स्थिति में गलती नहीं कर सकता और दूसरों में गलतियाँ या कमियाँ ही हैं बल्कि होना यह चाहिये कि गलती अपनी देखिये और विशेषतायें दूसरों की, इससे बीच की दूरी दूर होकर दिन प्रतिदिन प्रेम व स्नेह का वातावरण उत्पन्न होगा।

जो भी हो पारिवारिक मन-मुटाव या क्लेश के कारण परिवार टूटे परिणाम अच्छे नहीं कहे जा सकते। पारिवारिक सद्भाव या प्रेम स्नेह बनाये रखने के लिये विवेक से गुत्थियों को समझ-बूझ के साथ सुलझाया जाना चाहिये। पारिवारिक समस्याओं का समय रहते समाधान किये बिना परिवार में सुख-शांति का वातावरण बनाये रखना असंभव है।

अतः परिवार के सदस्यों के बीच त्याग, प्रेम, स्नेह, धैर्य, सद्भावना एवं आपसी सामन्जस्य का होना अति आवश्यक है। किसी से कोई भूल हो भी जाय तो उसे रामायण के पात्रों की तरह स्वयं कष्ट सहन कर भूल करने वाले को सुधरने एवं पश्चाताप करने का अवसर प्रदान करें तभी कुटुंब का उद्देश्य एवं कर्तव्य पूरा हो सकता है। भारत की यह आदर्श प्रणाली घर-घर में स्वर्ग का वातावरण बनाये रखने में समर्थ रही है। अभी भी जिस घर में यह वातावरण है, वहाँ कितनी ही कठिनाईयाँ होते हुये भी आनन्द एवं संतोष का झरना बहता है। पर अब व्यक्तिगत स्वार्थपरता, अनुदार, लोभ, अहंकार आदि मानसिक मलीनताओं की अभिवृद्धि के साथ-साथ पारिवारिक आधार भी टूटते जा रहे हैं। घर-घर में कलह, ईर्ष्या, खींचतान, शोषण, द्वेष और मनोमालिन्य का वातावरण दिखाई पड़ता है। जरा से लोभ के लिये, थोड़े से स्वार्थ के लिये आत्मियता को त्याग कर मनुष्य अपने कुटुंबियों के लिये ही खून का प्यास बन जाता है। इसकी अनगिनत घटनायें पढ़ने और सुनने में आती रहती हैं। इसका अन्त कहाँ होगा, यह कल्पना करने मात्र से दिल दहलने लगता है।

श्री खण्डेलवाल वैश्य गर्ल्स इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी शिक्षा के क्षेत्र में बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन

के वी जी आई टी की स्थापना का उद्देश्य - बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने व उन्हें आत्मनिर्भर बनाने हेतु एक ऐसे संस्थान की आवश्यकता महसूस की गई जो इन उद्देश्यों को पूरा कर सके। सत्र 2010 में श्री खण्डेलवाल वैश्य एजुकेशन ट्रस्ट द्वारा खंडेलवाल वैश्य गर्ल्स इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की स्थापना के साथ ही यह स्वप्न साकार हुआ। केवीजीआईटी ने अपनी भव्य यात्रा तीन छात्राओं के साथ प्रारंभ की थी वर्तमान सत्र तक यहां 1550 छात्राएं विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत हैं। महाविद्यालय में छात्राओं को शिक्षा के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी अपनी योग्यता सिद्ध करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। यह महाविद्यालय छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु सदैव तत्पर रहता है। बालिका शिक्षा के क्षेत्र में केवीजीआईटी की छात्राओं ने समूचे शिक्षा जगत में अपनी विशेष पहचान बनाई है। महाविद्यालय शिक्षा के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी छात्राओं को प्रशिक्षण उपलब्ध करवाता है। केवीजीआईटी की स्थापना का उद्देश्य अर्थोपार्जन नहीं अपितु बालिकाओं का भविष्य निर्माण करना है। यहां की छात्राओं ने व्यावसायिक जगत में भी अपनी विशेष पहचान बनाई है।

खेलकूद के क्षेत्र में प्रमुख उपलब्धियां

शिक्षा प्राप्त कर लेने मात्र से सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु शारीरिक मानसिक व आध्यात्मिक सभी पक्षों का समान रूप से विकास होना आवश्यक है। प्राचीन काल से ही यदि हम भारतीय शिक्षा पद्धति पर दृष्टिपात करें तो विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते समय सभी पक्षों के विकास पर विशेष बल दिया जाता था। केवीजीआईटी प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति को अपनाते हुए बालिकाओं के सर्वांगीण विकास पर बल देता है। इसी तथ्य पर ध्यान केन्द्रित करते हुए महाविद्यालय में बालिकाओं को शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद में भी प्रशिक्षण दिया जाता है। खेलकूद हेतु महाविद्यालय में विशाल खेल कक्ष है जहां छात्राएं खेल का अभ्यास कर सकती हैं साथ ही प्रत्येक खेल के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षक भी उपलब्ध हैं। केवीजीआईटी समय-समय पर खेल प्रतियोगिताएं आयोजित करवाता है। साथ ही छात्राओं को राज्य स्तर से अंतरराष्ट्रीय स्तर तक की खेल प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाता है महाविद्यालय की छात्राओं ने अंतरराष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहचान बनाई है। केवीजीआईटी की छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में 124 पदक प्राप्त किए हैं जिनमें 32 स्वर्ण पदक 44

रजत पदक 48 कांस्य पदक प्राप्त किए हैं। यहां उन छात्राओं का उल्लेख करना आवश्यक है जिन्होंने खेल जगत में अपनी विशेष पहचान बनाई है अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक प्राप्त करने वाली छात्राएं-

1. प्रतिभा पारीक (बीकॉम) ने ढाका बांग्लादेश में आयोजित अंतरराष्ट्रीय रोल बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

राष्ट्रीय स्तर पर पदक प्राप्त करने वाली छात्राएं:- प्रतिभा पारीक बीकॉम राष्ट्रीय रोल बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता कांस्य पदक, नेहा खंडेलवाल राष्ट्रीय रोल बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता कांस्य पदक, अनीता राष्ट्रीय रोल बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता कांस्य पदक, प्रियांशी शर्मा ऑल इंडिया बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता मिजोरम व चंडीगढ़ में रजत पदक प्राप्त किया, निकिता कंवर ऑल इंडिया बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता मिजोरम में चंडीगढ़ में रजत पदक प्राप्त किया। नागालैंड में बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।, कुमारी मनीषा पंजाब खालसा यूनिवर्सिटी में 31 मई से 2 जून 2019 एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।, स्नेहा चौधरी राष्ट्र स्तरीय एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।, सुमिता पूनिया अखिल भारतीय शतरंज प्रतियोगिता में भाग लिया।, अंजू चौधरी नेटबॉल अखिल भारतीय यूनिवर्सिटी प्रतियोगिता मंगलौर में भाग लिया, किरण कुमावत अखिल भारतीय विश्वविद्यालय नेट बॉल प्रतियोगिता मंगलौर में भाग लिया, संजू राणा राष्ट्र स्तरीय विश्वविद्यालय जूडो प्रतियोगिता में भाग लिया।, रश्मि चौधरी राष्ट्रीय स्तरीय विश्वविद्यालय कुश्ती व जूडो प्रतियोगिता में भाग लिया।, पायल शर्मा अखिल भारतीय कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लिया।, श्रुति निर्वाण राष्ट्र स्तरीय विश्वविद्यालय रोल बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता में रजत पदक प्राप्त किया।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली छात्राओं का विवरण- दीपा सांमरिया राज्य स्तरीय हैंडबॉल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया, पायल शर्मा राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया, संजू राणा राज्य स्तरीय कुश्ती व जूडो प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया, राजकुमारी राव राज्य स्तरीय सीनियर कुश्ती प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया

इस प्रकार महाविद्यालय की छात्राओं ने खेल प्रतियोगिताओं में जिला स्तर से अंतरराष्ट्रीय स्तर तक भाग लिया व अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। महाविद्यालय की छात्राओं ने रोल बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता जूडो प्रतियोगिता कुश्ती प्रतियोगिता व बॉल बैडमिंटन में विशेष उपलब्धियां अर्जित की है।



KHANDELWAL VAISH GIRLS INSTITUTE OF TECHNOLOGY

KVGIT

Managed by Shri Khandelwal Vaishya Educational Trust
Affiliated to University of Rajasthan & Approved by DCE



Why to join KVGIT

- * Aesthetically Designed Building
- * Fully Air Conditioner Auditorium
- * Well Equipped Laboratories
- * Qualified Faculty Members
- * Affordable Fees
- * Training And Placement Tie Ups
- * Conveyance Facility
- * 24x7 Security
- * Excellent Library
- * Scholarship To Meritorious And Needy Students
- * Soft Skills Programme

25% scholarship by SKVET for Khandelwal students

MBA

RMAP CODE-250

Affiliated to: RTU, Kota | Approved by: AICTE

M.COM

ABST | BADM | EAFM

BBA

B.COM

BCA

MA

GEOGRAPHY | HISTORY

B.SC

BIO | MATHS

BA

Vaishali Marg, Vaishali Nagar, Jaipur-21

Web. : www.kvgit.org | E-mail: kvgitjaipur@gmail.com



0141-4022502, 6376298569, 6376276823



गायत्री उपासना का विधि-विधान

!! ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् !!

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ,
तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम
अपनी अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी
बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

मंत्र जप के लाभ :

गायत्री मंत्र का नियमित रूप से सात बार जप करने से व्यक्ति के
आसपास नकारात्मक शक्तियाँ बिलकुल नहीं आती।

जप से कई प्रकार के लाभ होते हैं, व्यक्ति का तेज बढ़ता है
और मानसिक चिंताओं से मुक्ति मिलती है। बौद्धिक क्षमता और
मेधाशक्ति यानी स्मरणशक्ति बढ़ती है। गायत्री मंत्र में चौबीस अक्षर
होते हैं, यह 24 अक्षर चौबीस शक्तियों-सिद्धियों के प्रतीक हैं। इसी
कारण ऋषियों ने गायत्री मंत्र को सभी प्रकार की मनोकामना को पूर्ण
करने वाला बताया है।

गायत्री उपासना कभी भी, किसी भी स्थिति में की जा सकती
है। हर स्थिति में यह लाभदायी है, परन्तु विधिपूर्वक भावना से जुड़े
न्यूनतम कर्मकाण्डों के साथ की गयी उपासना अति फलदायी मानी
गयी है। तीन माला गायत्री मंत्र का जप आवश्यक माना गया है।
शौच-स्नान से निवृत्त होकर नियत स्थान, नियत समय पर, सुखासन
में बैठकर नित्य गायत्री उपासना की जानी चाहिए।

उपासना का विधि-विधान इस प्रकार है -

1. **ब्रह्म सन्ध्या** - जो शरीर व मन को पवित्र बनाने के लिए की
जाती है। इसके अंतर्गत पाँच कृत्य करने होते हैं।

(अ) **पवित्रीकरण** - बाएँ हाथ में जल लेकर उसे दाहिने
हाथ से ढँक लें एवं मंत्रोच्चारण के बाद जल को सिर तथा शरीर पर
छिड़क लें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थांगतोऽपि वा।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

(ब) **आचमन** - वाणी, मन व अंतःकरण की शुद्धि के लिए
चम्मच से तीन बार जल का आचमन करें। हर मंत्र के साथ एक
आचमन किया जाए।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

(स) **शिखा स्पर्श एवं वंदन** - शिखा के स्थान को स्पर्श करते
हुए भावना करें कि गायत्री के इस प्रतीक के माध्यम से सदा सद्बिचार
ही यहाँ स्थापित रहेंगे। निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजः समन्विते।

तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

(द) **प्राणायाम** - श्वास को धीमी गति से गहरी खींचकर रोकना
व बाहर निकालना प्राणायाम के क्रम में आता है। श्वास खींचने के
साथ भावना करें कि प्राण शक्ति, श्रेष्ठता श्वास के द्वारा अंदर खींची
जा रही है, छोड़ते समय यह भावना करें कि हमारे दुर्गुण, दुष्प्रवृत्तियाँ,
बुरे विचार प्रश्वास के साथ बाहर निकल रहे हैं। प्राणायाम निम्न मंत्र
के उच्चारण के साथ किया जाए।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः, ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं, ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ।

(य) न्यास - इसका प्रयोजन है-शरीर के सभी महत्वपूर्ण अंगों में पवित्रता का समावेश तथा अंतः की चेतना को जगाना ताकि देव-पूजन जैसा श्रेष्ठ कृत्य किया जा सके। बाएँ हाथ की हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों को उनमें भिगोकर बताए गए स्थान को मंत्रोच्चार के साथ स्पर्श करें।

ॐ वां मे आस्येऽस्तु। (मुख कोट्ट)

ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। (नासिका के दोनों छिद्रों कोट्ट)

ॐ अक्षणोर्मे चक्षुरस्तु। (दोनों नेत्रों कोट्ट)

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (दोनों कानों कोट्ट)

ॐ बाह्योर्मे बलमस्तु। (दोनों भुजाओं कोट्ट)

ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु। (दोनों जंघाओं कोट्ट)

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि, तनूस्तन्वा मे सह सन्तु। (समस्त

शरीर परट्ट)

आत्मशोधन की ब्रह्म संध्या के उपरोक्त पाँचों कृत्यों का भाव यह है कि साधक में पवित्रता एवं प्रखरता की अभिवृद्धि हो तथा मलिनता-अवांछनीयता की निवृत्ति हो। पवित्र-प्रखर व्यक्ति ही भगवान के दरबार में प्रवेश के अधिकारी होते हैं।

2. देवपूजन - गायत्री उपासना का आधार केन्द्र महाप्रज्ञा-ऋतम्भरा गायत्री है। उनका प्रतीक चित्र सुसज्जित पूजा की वेदी पर स्थापित कर उनका निम्न मंत्र के माध्यम से आवाहन करें। भावना करें कि साधक की प्रार्थना के अनुरूप माँ गायत्री की शक्ति वहाँ अवतरित हो, स्थापित हो रही है।

ॐ आयातु वरदे देवि'क्षरे ब्रह्मवादिनि।

गायत्रिच्छन्दसां मातः ! ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥

ॐ श्री गायै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि, ततो नमस्कारं करोमि।

(ख) गुरु - गुरु परमात्मा की दिव्य चेतना का अंश है, जो साधक का मार्गदर्शन करता है। सद्गुरु के रूप में पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी का अभिवंदन करते हुए उपासना की सफलता हेतु गुरु आवाहन निम्न मंत्रोच्चारण के साथ करें।

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुरेव महेश्वरः।

गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

अखण्डमंडलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

ॐ श्रीगुरुवे नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(ग) माँ गायत्री व गुरु सत्ता के आवाहन व नमन के पश्चात् देवपूजन में घनिष्ठता स्थापित करने हेतु पंचोपचार द्वारा पूजन किया जाता है। इन्हें विधिवत् संपन्न करें। जल, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप तथा

नैवेद्य प्रतीक के रूप में आराध्य के समक्ष प्रस्तुत किये जाते हैं। एक-एक करके छोटी तश्तरी में इन पाँचों को समर्पित करते चलें। जल का अर्थ है - नम्रता-सहृदयता। अक्षत का अर्थ है - समयदान अंशदान। पुष्प का अर्थ है - प्रसन्नता-आंतरिक उल्लास। धूप-दीप का अर्थ है - सुगंध व प्रकाश का वितरण, पुण्य-परमार्थ तथा नैवेद्य का अर्थ है - स्वभाव व व्यवहार में मधुरता-शालीनता का समावेश।

ये पाँचों उपचार व्यक्तित्व को सत्प्रवृत्तियों से संपन्न करने के लिए किये जाते हैं। कर्मकाण्ड के पीछे भावना महत्वपूर्ण है।

(3) जप - गायत्री मंत्र का जप न्यूनतम तीन माला अर्थात् घड़ी से प्रायः पंद्रह मिनट नियमित रूप से किया जाए। अधिक बन पड़े, तो अधिक उत्तम। होठ हिलते रहें, किन्तु आवाज इतनी मंद हो कि पास बैठे व्यक्ति भी सुन न सकें। जप प्रक्रिया कषाय-कल्मषों-कुसंस्कारों को धोने के लिए की जाती है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

इस प्रकार मंत्र का उच्चारण करते हुए माला की जाय एवं भावना की जाय कि हम निरन्तर पवित्र हो रहे हैं। दुर्बुद्धि की जगह सद्बुद्धि की स्थापना हो रही है।

(4) ध्यान - जप तो अंग-अवयव करते हैं, मन को ध्यान में नियोजित करना होता है। साकार ध्यान में गायत्री माता के अंचल की छाया में बैठने तथा उनका दुलार भरा प्यार अनवरत रूप से प्राप्त होने की भावना की जाती है। निराकार ध्यान में गायत्री के देवता सविता की प्रभातकालीन स्वर्णिम किरणों को शरीर पर बरसने व शरीर में श्रद्धा-प्रज्ञा-निष्ठा रूपी अनुदान उतरने की भावना की जाती है, जप और ध्यान के समन्वय से ही चित्त एकाग्र होता है और आत्मसत्ता पर उस क्रिया का महत्वपूर्ण प्रभाव भी पड़ता है।

(5) सूर्यार्घ्यदान - विसर्जन-जप समाप्ति के पश्चात् पूजा वेदी पर रखे छोटे कलश का जल सूर्य की दिशा में रूअध्य रूप में निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ चढ़ाया जाता है।

ॐ सूर्यदेव ! सहस्रांशो, तेजोराशे जगत्पते।

अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

ॐ सूर्याय नमः, आदित्याय नमः, भास्कराय नमः॥

भावना यह करें कि जल आत्म सत्ता का प्रतीक है एवं सूर्य विराट् ब्रह्म का तथा हमारी सत्ता-सम्पदा समष्टि के लिए समर्पित-विसर्जित हो रही है।

इतना सब करने के बाद पूजा स्थल पर देवताओं को करब) नतमस्तक हो नमस्कार किया जाए व सब वस्तुओं को समेटकर यथास्थान रख दिया जाए। जप के लिए माला तुलसी या चंदन की ही लेनी चाहिए। सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व से सूर्यास्त के एक घंटे बाद तक कभी भी गायत्री उपासना की जा सकती है। मौन-मानसिक जप चौबीस घण्टे किया जा सकता है। माला जपते समय तर्जनी उंगली का उपयोग न करें तथा सुमेरु का उल्लंघन न करें।

‘रामचरित मानस’ से रामनवमी पर विशेष



हम स्वयंमेव अपने में सद्गुणों का विकास कर स्वयं में रामराज्य कल्पना को साकार करें, मूर्त रूप देने का प्रयास करें। निःसन्देह हमारे अपने स्वयं के सद्गुण आन्तरिक प्रसन्नता के साथ अपने परिवारजनों, स्नेहीजनों के लिये सुख व शांति के साथ रामराज्य की कल्पना को साकार करने में समर्थ होंगे साथ ही हम स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की विशेष कृपा के लाभकारी भी।

‘रामराज्य’

राम राज बैठें त्रैलोक्या। हरषित भए गए सब सोका।

बयारु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई॥

भावार्थ : श्री रामचंद्रजी के राज्य पर प्रतिष्ठित होने पर तीनों लोक हर्षित हो गए, उनके सारे शोक जाते रहे। कोई किसी से वैर नहीं करता। श्री रामचंद्रजी के प्रताप से सबकी विषमता (आंतरिक भेदभाव) मिट गई।

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।

चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग॥

भावार्थ : सब लोग अपने-अपने वर्ण और आश्रम के अनुकूल धर्म में तत्पर हुए सदा वेद मार्ग पर चलते हैं और सुख पाते हैं। उन्हें न किसी बात का भय है, न शोक है और न कोई रोग ही सताता है।

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

भावार्थ : श्रामराज्यश्रुति में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते। सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बताई हुई नीति (मर्यादा) में तत्पर रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं।

चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं।

राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी॥

भावार्थ : धर्म अपने चारों चरणों (सत्य, शौच, दया और दान) से जगत् में परिपूर्ण हो रहा है, स्वप्न में भी कहीं पाप नहीं है। पुरुष और स्त्री सभी रामभक्ति के परायण हैं और सभी परम गति (मोक्ष) के अधिकारी हैं।

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा।

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥

भावार्थ : छोटी अवस्था में मृत्यु नहीं होती, न किसी को कोई पीड़ा होती है। सभी के शरीर सुंदर और निरोग हैं। न कोई दरिद्र है, न दुःखी

है और न दीन ही है। न कोई मूर्ख है और न शुभ लक्षणों से हीन ही है।

सब निर्दभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी।

सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥

भावार्थ : सभी दम्भरहित हैं, धर्मपरायण हैं और पुण्यात्मा हैं। पुरुष और स्त्री सभी चतुर और गुणवान् हैं। सभी गुणों का आदर करने वाले और पण्डित हैं तथा सभी ज्ञानी हैं। सभी कृतज्ञ (दूसरे के किए हुए उपकार को मानने वाले) हैं, कपट-चतुराई (धूर्तता) किसी में नहीं है।

राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं।

काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं॥

भावार्थ : (काकभुशुण्डिजी कहते हैं-) हे पक्षीराज गुरुइजी! सुनिए। श्री राम के राज्य में जड़, चेतन सारे जगत् में काल, कर्म स्वभाव और गुणों से उत्पन्न हुए दुःख किसी को भी नहीं होते (अर्थात् इनके बंधन में कोई नहीं है)।

भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला।

भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू॥

भावार्थ : अयोध्या में श्री रघुनाथजी सात समुद्रों की मेखला (करधनी) वाली पृथ्वी के एक मात्र राजा हैं। जिनके एक-एक रोम में अनेकों ब्रह्मांड हैं, उनके लिए सात द्वीपों की यह प्रभुता कुछ अधिक नहीं है।

सो महिमा समुद्रत प्रभु केरी। यह बरनत हीनता घनेरी

सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी॥ फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी॥

भावार्थ : बल्कि प्रभु की उस महिमा को समझ लेने पर तो यह कहने में (कि वे सात समुद्रों से घिरी हुई सप्त द्वीपमयी पृथ्वी के एकच्छत्र सम्राट हैं) उनकी बड़ी हीनता होती है, परंतु हे गरुड़जी! जिन्होंने वह महिमा जान भी ली है, वे भी फिर इस लीला में बड़ा प्रेम मानते हैं।

सोड जाने कर फल यह लीला। कहहिं महा मुनिबर दमसीला।
राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा॥
भावार्थ : क्योंकि उस महिमा को भी जानने का फल यह लीला (इस लीला का अनुभव) ही है, इन्द्रियों का दमन करने वाले श्रेष्ठ महामुनि ऐसा कहते हैं। रामराज्य की सुख सम्पत्ति का वर्णन शेषजी और सरस्वतीजी भी नहीं कर सकते।

सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी।
एकनारि ब्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी॥
भावार्थ : सभी नर-नारी उदार हैं, सभी परोपकारी हैं और ब्राह्मणों के चरणों के सेवक हैं। सभी पुरुष मात्र एक पत्नीव्रती हैं। इसी प्रकार स्त्रियाँ भी मनए वचन और कर्म से पति का हित करने वाली हैं।

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र के राज॥
भावार्थ : श्री रामचंद्रजी के राज्य में दण्ड केवल संन्यासियों के हाथों में है और भेद नाचने वालों के नृत्य समाज में है और श्जीतोश् शब्द केवल मन के जीतने के लिए ही सुनाई पड़ता है (अर्थात् राजनीति में शत्रुओं को जीतने तथा चोर-डाकुओं आदि को दमन करने के लिए साम, दान, दण्ड और भेद- ये चार उपाय किए जाते हैं। रामराज्य में कोई शत्रु है ही नहीं, इसलिए श्जीतोश् शब्द केवल मन के जीतने के लिए कहा जाता है। कोई अपराध करता ही नहीं, इसलिए दण्ड किसी को नहीं होता, दण्ड शब्द केवल संन्यासियों के हाथ में रहने वाले दण्ड के लिए ही रह गया है तथा सभी अनुकूल होने के कारण भेदनीति की आवश्यकता ही नहीं रह गई। भेद, शब्द केवल सुर-ताल के भेद के लिए ही कामों में आता है।

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक सँग गज पंचानन।
खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई॥
भावार्थ : वनों में वृक्ष सदा फूलते और फलते हैं। हाथी और सिंह (वैर भूलकर) एक साथ रहते हैं। पक्षी और पशु सभी ने स्वाभाविक वैर भुलाकर आपस में प्रेम बढ़ा लिया है।

कूजहिं खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहिं बन करहिं अनंदा।
सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा॥
भावार्थ : पक्षी कूजते (मीठी बोली बोलते) हैं, भाँति-भाँति के पशुओं के समूह वन में निर्भय विचरते और आनंद करते हैं। शीतल, मन्द, सुगंधित पवन चलता रहता है। भौर पुष्पों का रस लेकर चलते हुए गुंजार करते जाते हैं।

लता बिटप मार्गे मधु चवहीं। मनभावतो धेनु पय स्रवहीं।
ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेतां भइ कृतजुग कै करनी॥
भावार्थ : बेलें और वृक्ष माँगने से ही मधु (मकरन्द) टपका देते हैं। गायें मनचाहा दूध देती हैं। धरती सदा खेती से भरी रहती है। त्रेता में सत्ययुग की करनी (स्थिति) हो गई।

प्रगटीं गिरिन्ह बिबिधि मनि खानी। जगदातमा भूप जग जानी।
सरिता सकल बहहिं बर बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी॥
भावार्थ : समस्त जगत् के आत्मा भगवान् को जगत् का राजा जानकर पर्वतों ने अनेक प्रकार की मणियों की खानें प्रकट कर दीं। सब नदियाँ श्रेष्ठ, शीतल, निर्मल और सुखप्रद स्वादिष्ट जल बहाने लगीं।

सागर निज मरजादाँ रहहीं। डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं।
सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा॥
भावार्थ : समुद्र अपनी मर्यादा में रहते हैं। वे लहरों द्वारा किनारों पर रत्न डाल देते हैं, जिन्हें मनुष्य पा जाते हैं। सब तालाब कमलों से परिपूर्ण हैं। दसों दिशाओं के विभाग (अर्थात् सभी प्रदेश) अत्यंत प्रसन्न हैं।

बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज।
मार्गे बारिद देहिं जल रामचंद्र के राज॥
भावार्थ : श्री रामचंद्रजी के राज्य में चंद्रमा अपनी (अमृतमयी) किरणों से पृथ्वी को पूर्ण कर देते हैं। सूर्य उतना ही तपते हैं, जितने की आवश्यकता होती है और मेघ माँगने से (जब जहाँ जितना चाहिए उतना ही) जल देते हैं।

कोटिन्ह बाजिमध प्रभु कीन्हे। दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे॥
श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर। गुनातीत अरु भोग पुरंदर॥
भावार्थ : प्रभु श्री रामजी ने करोड़ों अश्वमेध यज्ञ किए और ब्राह्मणों को अनेकों दान दिए। श्री रामचंद्रजी वेदमार्ग के पालने वाले, धर्म की धुरी को धारण करने वाले, (प्रकृतिजन्य सत्व, रज और तम) तीनों गुणों से अतीत और भोगों (ऐश्वर्य) में इन्द्र के समान हैं।

पति अनुकूल सदा रह सीता। सोभा खानि सुसील बिनीता।
जानति कृपासिंधु प्रभुताई॥ सेवति चरन कमल मन लाई॥
भावार्थ : शोभा की खान, सुशील और विनम्र सीताजी सदा पति के अनुकूल रहती हैं। वे कृपासागर श्री रामजी की प्रभुता (महिमा) को जानती हैं और मन लगाकर उनके चरणकमलों की सेवा करती हैं।

जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी। बिपुल सदा सेवा बिधि गुनी।
निज कर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयसु अनुसरई॥
भावार्थ : यद्यपि घर में बहुत से (अपार) दास और दासियाँ हैं और वे सभी सेवा की विधि में कुशल हैं, तथापि (स्वामी की सेवा का महत्व जानने वाली) श्री सीताजी घर की सब सेवा अपने ही हाथों से करती हैं और श्री रामचंद्रजी की आज्ञा का अनुसरण करती हैं।

जेहि बिधि कृपासिंधु सुख मानइ। सोइ कर श्री सेवा बिधि जानइ।
कौसल्यादि सासु गृह माहीं। सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं॥
भावार्थ : कृपासागर श्री रामचंद्रजी जिस प्रकार से सुख मानते हैं, श्री

जी वही करती हैं, क्योंकि वे सेवा की विधि को जानने वाली हैं। घर में कौसल्या आदि सभी सासुओं की सीताजी सेवा करती हैं, उन्हें किसी बात का अभिमान और मद नहीं है।

उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता। जगदंबा संततमनिंदिता।

भावार्थ : (शिवजी कहते हैं-) हे उमा जगज्जननी रमा (सीताजी) ब्रह्मा आदि देवताओं से वंदित और सदा अनिंदित (सर्वगुण संपन्न) हैं।

जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोइ।

राम पदारबिंद रति करति सुभावहि खोइ॥

भावार्थ : देवता जिनका कृपाकटाक्ष चाहते हैं, परंतु वे उनकी ओर देखती भी नहीं, वे ही लक्ष्मीजी (जानकीजी) अपने (महामहिम) स्वभाव को छोड़कर श्री रामचंद्रजी के चरणारविन्द में प्रीति करती हैं।

सेवहिं सानकूल सब भाई। राम चरन रति अति अधिकाई।

प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं। कबहुं कृपालु हमहि कछु कहहीं॥

भावार्थ : सब भाई अनुकूल रहकर उनकी सेवा करते हैं। श्री रामजी के चरणों में उनकी अत्यंत अधिक प्रीति है। वे सदा प्रभु का मुखारविन्द ही देखते रहते हैं कि कृपालु श्री रामजी कभी हमें कुछ सेवा करने को कहें।

राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिं नीती।

हरषित रहहिं नगर के लोग। करहिं सकल सुर दुर्लभ भोग॥

भावार्थ : श्री रामचंद्रजी भी भाइयों पर प्रेम करते हैं और उन्हें नाना प्रकार की नीतियाँ सिखलाते हैं। नगर के लोग हर्षित रहते हैं और सब प्रकार के देवदुर्लभ (देवताओं को भी कठिनता से प्राप्त होने योग्य) भोग भोगते हैं।

अहनिसि बिधिहि मनावत रहहीं। श्री रघुबीर चरन रति चहहीं।

दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए। लव कुस बेद पुरानन्ह गाए॥

भावार्थ : वे दिन-रात ब्रह्माजी को मनाते रहते हैं और (उनसे) श्री रघुवीर के चरणों में प्रीति चाहते हैं। सीताजी के लव और कुश ये दो पुत्र उत्पन्न हुए, जिनका वेद-पुराणों ने वर्णन किया है।

दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर। हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर।

दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे। भए रूप गुन सील घनेरे॥

भावार्थ : वे दोनों ही विजयी (विख्यात योद्धा), नम्र और गुणों के धाम हैं और अत्यंत सुंदर हैं, मानो श्री हरि के प्रतिबिम्ब ही हों। दो-दो पुत्र सभी भाइयों के हुए, जो बड़े ही सुंदर, गुणवान् और सुशील थे।

आवश्यक सूचना

अ. भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा

गंगा मन्दिर, स्टेशन रोड, जयपुर

सम्माननीय,

पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य

अ.भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा, जयपुर

जैसा कि आप सभी को विदित है ‘नोवेल कोरोना वायरस’ संक्रमण प्रसार को रोकने के लिये/सुरक्षित रहने के लिये केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा सामुहिक कार्यक्रम आयोजित करना निषेध किया हुआ। इसी क्रम में अ.भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा के समस्त पदाधिकारीगण व कार्यकारिणी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि ‘नोवेल कोरोना वायरस’ संक्रमण की भयावता के कारण महासभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी मीटिंग को मई-2020 तक स्थगित की जा रही है। जैसे ही इस स्थिति नियंत्रण में होगी एवं सामुहिक कार्यक्रम आयोजित करने की निषेधाज्ञा समाप्त होगी महासभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी मीटिंग की सूचना महासभा पत्रिका में प्रकाशित कर आप सभी को प्रेषित की जायेगी।

धन्यवाद सहित।

नरेश रावत, दिल्ली

प्रधानमंत्री

अ.भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा, जयपुर

अ. भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा, गंगा मन्दिर, स्टेशन रोड, जयपुर
(34 वां दिल्ली महाअधिवेशन सत्र, पदाधिकारी सूची)
सम्माननीय संरक्षक, उपाध्यक्ष, संयुक्तमंत्री, भू.पू. प्रधानमंत्री

संरक्षक		
श्री रामकिशोर ताम्बी	जयपुर	मो. 94140 68264
श्री राजेन्द्रप्रसाद बटवाडा	जयपुर	मो. 98290 60908
श्री रामरतन घीया	जयपुर	मो. 93145 01485
श्री राजेन्द्र प्रसाद बुढवारिया	दिल्ली	मो. 98110 27264
श्री गिराजप्रसादखण्डेलवाल(रोणपुर वाले)	अलवर	मो. 94134 45456
श्री रमेश खण्डेलवाल (शक्कर वाले)	इन्दौर	मो. 94134 45456
श्री सुरेश गुप्ता 'विभव'	आगरा	मो. 93191 25770
श्री रामसहाय जी खण्डेलवाल (खेरली वाले)	खरली	मो. 94149 86630
श्रीमती निर्मला रावत	जयपुरी	मो. 93140 14040
श्री नरेन्द्र टोडवाल	इन्दौर	मो. 93140 14040
श्री मोहनलाल खण्डेलवाल	रांची	मो. 79037 12492
श्री सुरेश रावत	नासिक	मो. 98220 25468
श्री कृष्ण टोडवाल	मथुरा	
श्री अमृतलाल खण्डेलवाल	मथुरा	मो. 98220 25468
श्री सुभाषचन्द्र खण्डेलवाल (बम्ब)	हावडा	मो. 94330 42973
श्री उमेश गोटेवाला	जयपुर	मो. 94140 41580
श्रीमती ज्योति खण्डेलवाल	जयपुर	मो. 93145 05854
श्री महावीरशरण नाटाणी	जयपुर	मो. 93517 49857
श्री मोहनलाल गुप्ता	जयपुर	मो. 98290 10175
श्री प्रेमप्रकाश शाह	दिल्ली	मो. 93122 28355
श्री कृष्णकुमार ताम्बी	कोटा	मो. 94141 84008
श्री शम्भूदयाल गुप्ता	जयपुर	मो. 94133 45511
श्री अनिल जी ताम्बी	बैंकाक, जयपुर	मो. 97549 03175
श्री ओमप्रकाश दुसाद	जयपुर	मो. 94142 06580
श्री बालकृष्ण खण्डेलवाल (रावत)	ग्वालियर	मो. 94257 00090

उपाध्यक्ष		
श्री लक्ष्मीनारायण भुखमारिया	दिल्ली	मो. 98107 65047
श्री गोपाल कासलीवाल	जयपुर	मो. 9351858174
श्री ओमप्रकाश काठ	बांदीकुई	मो. 94142 16315
श्री भगवान गुप्ता	बालासोर	मो. 94370 15391
श्री श्याम मोहनलाल ताम्बी	मुम्बई	मो. 98200 44939
श्री सुरेश खण्डेलवाल (बुढवारिया)	दिल्ली	मो. 93137 46749
श्री सुरेश काठ	नोयडा	मो. 93122 26545
श्री राजेन्द्रप्रसाद ताम्बी	जयपुर	मो. 98292-00234
श्री दिनेश कानूनगो	जयपुर	मो. 98290 11784
श्री ललितमोहन खण्डेलवाल (दुसाद)	बांरा	मो. 94141 90996
श्रीमती रजनीबाला ताम्बी	कोटा	मो. 98290 35735
संयुक्तमंत्री		
श्री गिराजप्रसाद माणक बोहरा	जयपुर	मो. 94143 05017
श्री गिरधारीलाल खण्डेलवाल	जयपुर	मो. 94142 50009
श्री दीपक खण्डेलवाल	जयपुर	मो. 97840 02640
श्री महेशचन्द्र खण्डेलवाल	मथुरा	मो. 94122 80131
श्री सुरेश जसोरिया	दिल्ली	मो. 93122 33697
श्री द्वारकाप्रसाद कट्टा	कोटा	मो. 94149 38111
श्रीमती हेमलता लाभ	कोटा	मो. 98290 37520
श्री ललित मामोडिया	दिल्ली	मो. 882653 33296
श्री राजेन्द्र कुमार खण्डेलवाल	जयपुर	मो. 98290 60317
श्री सत्यनारायण गुप्ता	तूंगा	मो. 94142 80679
पदेन सदस्य भूतपूर्व प्रधानमंत्री		
श्री प्रवीन खण्डेलवाल	दिल्ली	मो. 98910 15165
श्री राकेश रावत	दिल्ली	मो. 93139 96313
श्री नरेश खण्डेलवाल	दिल्ली	मो. 98155-55125

अ. भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा, गंगा मन्दिर, स्टेशन रोड, जयपुर

(34 वां दिल्ली महाअधिवेशन सत्र)

महासभा की विभिन्न समितियों के संयोजक, प्रभारी, निर्णायक मण्डल, सलाहकार एवं मार्गदर्शक मण्डल तथा हायर एजुकेशनफण्ड ट्रस्टीगण

श्री राकेश रावत	दिल्ली	प्रभारी, खण्डेलवाल वैश्य महासभा भवन, शास्त्री नगर, जयपुर	मो. 98100 18159
श्री अवधेश डंगायच (आजीवन संरक्षक)	जयपुर	संयोजक, खण्डेलवाल वैश्य महासभा भवन, शास्त्री नगर, जयपुर	मो. 99283 02844
श्री उमेश गोटेवाला	जयपुर	संयोजक, राज्य सरकारो से संबंधित एवं प्रशासनीय	मो. 94140 41580
श्री राजेन्द्रप्रसाद ताम्बी	जयपुर	संयोजक, हायर एजुकेशन फण्ड आर्थिक सहायता आवेदन पत्र जाँच समिति	मो. 98292-00234
श्री वीरेन्द्र गुप्ता	जयपुर	संयोजक, श्री खण्डेलवाल वैश्य महासभा हायर एजुकेशन फण्ड के भूतपूर्व छात्र सम्पर्क समिति	मो. 98290 56226
श्री ओमप्रकाश कानूनगो	जयपुर	संयोजक, शिक्षा समिति	मो. 94143 55230
श्री बनवारीलाल गुप्ता (एडवोकेट)	जयपुर	संयोजक, विधान संशोधन समिति	मो. 98281 59134
श्रीमती सोनिया खण्डेलवाल	जयपुर	संयोजक, महिला कल्याण समिति	
श्री प्रकाश कानूनगो	जयपुर	संयोजक, जनकल्याण समिति	मो. 94600 69792
श्री राजेन्द्र कूलवाल	जयपुर	संयोजक, बधाई एवं शुभकामना पत्र समिति	मो. 94143 38465
श्री प्रकाश घीया	कोटा	संयोजक, युवा समिति	मो. 6376179898
श्री अनिल बडगोती	दिल्ली	संयोजक, जनसंपर्क समिति	मो. 99990 64132
श्री सुभाषचंद्र खण्डेलवाल, एडवोकेट	जयपुर	संयोजक, एडवोकेट पैनल एवं विधिक	मो. 94140 75022
श्रीमती हिरल गुप्ता	अहमदाबाद	संयोजक, महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक चेतना समिति	मो. 97278 27773
श्रीमती ममता गुप्ता	ब्यावर	संयोजक, महिला सम्मेलन समिति	मो. 99297 88388
श्री महेश कूलवाल	जयपुर	संयोजक, सांस्कृतिक समिति	मो. 93144 33271
श्री रामनारायण नाटाणी	जयपुर	संयोजक, मैरीज ब्यूरो एवं बायोडाटा समिति	
श्री पुनीत ठाकुरिया	दिल्ली	संयोजक, मैरीज ब्यूरो समिति	मो. 98110 39641
श्री संजीव कट्टा	जयपुर	संयोजक, महासभा की कन्यादान उपहार योजना समिति	
डॉ. आलोक खंडेटा	जयपुर	संयोजक, समाज सुधार एवं सामाजिक कुर्रतियां निवारण समिति	
श्री निलेश कुमार खण्डेलवाल	जयपुर	संयोजक, इलैक्ट्रोनिक मीडिया समिति	
श्री अनिल जी ताम्बी	जयपुर	संयोजक, आपात एवं गम्भीर चिकित्सा सहायता समिति	मो. 97549 03175
श्री नितिन कुमार दुसाद	कोटा	संयोजक, रोजगार ब्यूरो समिति	मो. 94629 68584
श्री विठ्ठलदास बाजरगान	जयपुर	संयोजक, प्रतिभा सम्मान समिति	मो. 94133 42016

श्री नरेश ताम्बी	जयपुर	संयोजक, खण्डेलवाल महासभा पत्रिका सदस्यता अभियान समिति	मो. 94140 50118
श्री राजेश कुमार गुप्ता	अलवर	संयोजक, खण्डेलवाल समाज-देहात उन्नयन एवं उत्थान समिति	मो. 94140 19162
श्री शांकरलाल गुप्ता (टोडवाल)	जयपुर	संयोजक, पारिवारिक समन्वय एवं तलाक समस्या निवारण समिति	मो. 93140 65272
श्री अशोक कुमार मेठी (खण्डेलवाल)	जमशेदपुर	संयोजक, क्षेत्रीय संस्थाये समन्वयक एवं ध्वजगान प्रसार समिति	मो. 94703 54976
श्री अटलबिहारी गुप्ता	डांगरवाडा	संयोजक, सामुहिक विवाह एवं परिचय सम्मेलन समिति	
श्री अशोक कुमार खण्डेलवाल	उज्जैन	संयोजक, प्रोफेशनल्स संयोजन समिति	मो. 93990 08071
श्री त्रिलोक खण्डेलवाल	जयपुर	संयोजक, रक्तदान एवं चिकित्सा शिविर समिति का	
श्री हनुमान खण्डेलवाल	जयपुर	संयोजक, सरकारी मैडीकल सहायता समिति	
श्री रमेश कुमार नाटाणी	जयपुर	संयोजक, वृद्धजन सम्मान समिति	मो. 94143 08311
श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल (बनावडी)	इन्दौर	संयोजक, सामुहिक विवाह समिति	
श्री श्रीकान्त खूटेटा	जयपुर	संयोजक, प्रभारी [information technology]	मो. 94147 18656
श्री कालीचरणदास खण्डेलवाल (पूर्व अध्यक्ष)	अजमेर	मार्गदर्शक व सलाहकार मण्डल	मो. 94140 03357
श्री सुरेश गुप्ता 'विभव' (संरक्षक)	आगरा	मार्गदर्शक व सलाहकार मण्डल	मो. 9319125770
श्री सुरेश मेठी (प्रधान संरक्षक)	दिल्ली	मार्गदर्शक व सलाहकार मण्डल	मो. 93122 15286
श्री राजेन्द्रप्रसाद बटवाडा (संरक्षक)	जयपुर	मार्गदर्शक व सलाहकार मण्डल	मो. 98290 60908
श्री रामरतन घीया (संरक्षक)	जयपुर	कोर्डिनेटर, मार्गदर्शक व सलाहकार मण्डल	मो. 93145 01485
श्री रमेशखण्डेलवाल(शक्कर वाले) (संरक्षक)	इन्दौर	मार्गदर्शक व सलाहकार मण्डल	मो. 94250 65071
श्री मोहनलाल खण्डेलवाल (संरक्षक)	रांची	मार्गदर्शक व सलाहकार मण्डल	मो. 79037 12492
श्री हरिनारायण गुप्ता, एडवोकेट	जयपुर	संयोजक, निर्णायक मण्डल	मो. 93145 12659
श्री ओमप्रकाश गुप्ता	सूरत	सदस्य, निर्णायक मण्डल	मो. 86191 21186
श्री ओमप्रकाश गुप्ता	दिल्ली	सदस्य, निर्णायक मण्डल	मो. 98990 29912
श्री रमेशचन्द्र खण्डेलवाल (सौखिया)	जयपुर	सदस्य, निर्णायक मण्डल	मो. 96369 08059
श्री हेमन्त खण्डेलवाल	इन्दौर	सदस्य, निर्णायक मण्डल	मो. 98270 32337
श्री अनिल जी खण्डेलवाल	पना	चेयरमेन, श्री खण्डेलवाल वैश्य महासभा हायर एजुकेशन फण्ड ट्रस्ट	मो. 93260 74464
श्री राहुल रमेश खण्डेलवाल ,	मुम्बई	ट्रस्टी, श्री खण्डेलवाल वैश्य महासभा हायर एजुकेशन फण्ड ट्रस्ट	मो. 98202 37213
श्री राधेश्याम खण्डेलवाल	मुम्बई	ट्रस्टी, श्री खण्डेलवाल वैश्य महासभा हायर एजुकेशन फण्ड ट्रस्ट	मो. 93222 91892
श्रीमान् रमेशचन्द्र गुप्ता (तूंगा वाले) (राष्ट्रीय अध्यक्ष)	जयपुर	ट्रस्टी, श्री खण्डेलवाल वैश्य महासभा हायर एजुकेशन फण्ड ट्रस्ट	मो. 93145-66800
श्री विजय खण्डेलवाल (मुख्य कार्यकारी अध्यक्ष)	भुवनेश्वर	ट्रस्टी, श्री खण्डेलवाल वैश्य महासभा हायर एजुकेशन फण्ड ट्रस्ट	मो. 98610 55750
श्री नरेश रावत (प्रधानमंत्री)	दिल्ली	ट्रस्टी, श्री खण्डेलवाल वैश्य महासभा हायर एजुकेशन फण्ड ट्रस्ट	मो. 98100 06182



फिट रहने के लिये खुश रहें



■ सांवलदास खण्डेलवाल (खूंटेठा)

विधाधर नगर, जयपुर

खु

शी का संबंध हमारी सेहत से है। जब हम खुश होते हैं तो उसमें हमारी फिटनेस का लेबल भी कई गुना बढ़ जाता है। जब आप खुश होते हैं तो सब कुछ अच्छा लगता है। दिल हैल्दी रहता है। चिकित्सा वैज्ञानिकों ने पाया है कि जब आप खुश रहते हैं तब आपकी धड़कन सामान्य से कुछ धीमी और रक्तचाप सामान्य से कुछ कम धीमी और रक्तचाप सामान्य से कुछ कम रहता है। मतलब आप खुश रहकर दिल को थोड़ी राहत दे देते हैं और अपनी जिन्दगी लंबी कर देते हैं। और एक बात जो सब भूल जाते हैं कि आपकी जिन्दगी से ही आपको प्यार करने वालों की

खुशी बंधी हुई हैं। यानि अगर आप स्वस्थ रहेंगे तो आपके परिजन भी खुश और स्वस्थ रहेंगे।

जब आप खुश रहते हैं तो उस समय दर्द का एहसास भी कम होता है साथ ही बीमार होने पर भी आपको राहत महसूस होती है। सकारात्मक भावनाओं से ओत प्रोत लोगो यानी हमेशा खुश रहने वाले लोगो में दर्द सहन करने की क्षमता भी अधिक होती है। बस अपने दिमाग पर जोर डालिये और ढूँढ लीजिये खुश रहने का कोई तरीका। सिनेमा देखना, किताबें पढ़ना, संगीत सुनना, मित्रों से बातचीत करना, बच्चों के साथ खेलना इत्यादि में कुछ भी खुश रहने का एक कारण तो मिल ही जायेगा।

छोड़ो चिन्ता, फिक्र से नहीं मन से होते हैं। यह शारीरिक से ज्यादा मानसिक अवस्था है। युवा बने रहने के लिये उम्र कोई बंधन नहीं। यह तो महज एक आंकड़ा है। चिंतन करो, चिन्ता नहीं, दिल की सुनो दिमाग की नहीं। मन की सोच सुंदर हो तो सारा संसार सुन्दर दिखता है। मानसिक शांति आनन्द प्राप्त करने के लिये मन को व्यर्थ की उलझनों में न जाने दें। हमेशा कुछ न कुछ सीखते रहें। अगर किसी काम को करने की इच्छा और उत्साह का अपनी जिंदगी का हिस्सा बना लिया जाये तो हमेशा जवा बने रहेंगे। दूसरो से तुलना न करें। दूसरों को देखकर अपनी सफलता की तुलना करना, असुरक्षित महसूस करना, जलन होना, यह बताता है कि आप उम्र के ढलान पर हैं और मानसिक रूप से बूढ़े हो रहे हैं।

याद रखे आपकी प्रतिस्पर्धा किसी ओर से नहीं खुद से हैं। हर माह एक ऐसा दिन हो, जिस दिन न कोई नियम हो न कोई योजना ओर न कोई झिझक। जब आप अपने पसंद का काम करे, कुछी ऐसा करे ताकि अपने अंदर का युवा जाग सके।

खुशी का संबंध सुख से है। यदि जीवन में सुख है तो जीवन में खुशी है। लेकिन सुख-दुःख का जोड़ा है। हमेशा सुख ही सुख हो या दुःख ही दुःख हो यह संभव नहीं। हमारे यहाँ एक बहुत प्रचलित कहावत है कि 'हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश-अपयश सब बिधी हाथ'। इसमें लाभ, और यश हमारे सुख की परिभाषा से जुड़े है जबकि हानि, मृत्यु और अपयश दुःख की परिभाषा से जुड़े हैं। सुख-दुःख की हर व्यक्ति की अपनी पृथक मान्यता होती हैं। एक व्यक्ति किसी बात से सुखी होता है तो दूसरा उसी बात से दुःखी भी होता है। वर्षा आने पर माली प्रसन्न होता है, उसकी बगिया में बहार आती है। किन्तु कुम्हार अपना कार्य नहीं कर पाता, अतः उसे वर्षा अच्छी नहीं लगती। कोई सुखी हो या दुःखी वर्षा तो आनी हैं। 'गीता के दूसरे अध्याय में स्थित प्रज्ञ पुरुष का वर्णन है जो मनुष्य अपने मन को वश मे करके दुःख में दुःखी नहीं होता और सुख में सुखी नही होता यानि सम भाव में रहता है वह व्यक्ति मुक्ति के योग्य होता है।'

सीनियर सीटिजन (वरिष्ठ नागरिक) को विशेष सावधानी रखनी है। 60 वर्ष या उपर 70-80 वर्ष वाले व्यक्तियों को विशेष सावधानी रखनी हैं। इस उम्र के पडाव पर-उम्र बढ़ने के साथ-साथ शरीर में कई बदलाव होने लगते है। सेहत संबंधी परेशनियां बढ़ने लगती है। शरीर में कैल्शियम और विटामिन डी की कमी हो जाती है। शरीर कमजोर होने से सारे शरीर में दर्द व कई रोग घेरने लगत है। इसलिये स्वस्थ रहने के लिये निम्न बातों को हमेशा बनाये रखें -

- चिंतन करो, चिंता नहीं। दिल की सुनो, दिमाग की नहीं।
- दूसरों की खुशी में अपनी खुशी देखने का बहुत बड़ा हुनर है जो यह हुनर सीख जाता है वह कभी दुःखी नहीं होता।
- मानसिक सौंदर्य पर काम करें। श्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ें, श्रेष्ठ लोगो के साथ रहें। श्रेष्ठ घटनाओं के साक्षी बने।
- खुद को हमेशा व्यस्त रखें। कुछ अच्छे दोस्त बनायें।
- हल्का एवं सात्विक भोजन ही करें।
- मैडीटेशन और कसरत करें। जल्दी सोयें जल्दी उठें।
- अपने स्नानघर (बाथरूम) साफ एवं सूखा रखें।

प्रायः सुनने-पढ़ने में आता है कि बाथरूम में गिरने से कूल्हें की हड्डी टूट गई जो जुड़ने में नहीं आती और बड़ी परेशानी का कारण बन जाती हैं। इसलिये बहुत सावधानी की जरूरत है क्योंकि 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'।

ईश्वर का ध्यान हमेशा करते रहें। सुख ओर दुःख दोनो उसी की देन है। सुख में खुशी होती है एवं शोक या दुःख आता है तो सहानुभूति में सभी कहते है कि जो ईश्वर की मजी। कहावत है

'कोई तन दुःखी, कोई मन दुःखी,
कोई धन बिन रहे उदास,
थोड़े-थोड़े सब दुःखी
सुखी राम का दास'

इसलिये हमेशा ईश्वर के साथ रहो तो कोई दुःख नही फटकेगा। फिट रहने के लिये शरीर की भाषा (बॉडी लैंग्वेज)
'पैर गरम, पेट नरम और सिर ठंडा'
'जय सियाराम'

कविता



■ अलोक रघुनन्दन खण्डेलवाल 'कविमन'
अकोला

अलादीन का चिराग 'मोबाइल'

सीमित इसकी काया,
ब्रह्माण्ड इसमें समाया,
परिवार में मोबाइल ने,
सबस ऊँचा दर्जा पाया।

जो चाहो ये खोज लाता,
अपनो से दूर अपनो को,
चंद पलों में हैं मिलाता,
रिश्तों को मजबूत बनाता।
आज हम बोलते कम,
और लिखते ज्यादा हैं,
खुद खेले इससे हरदम,
बच्चों को सिखाते मर्यादा हैं।
मोबाइल हावी हो रहा,
हमपर हर एक लम्हा,
नाइलाज इसका रोग,
संभलकर करो उपयोग।
अलादीन का ये चिराग,
जकड लिया सबका दिमाग,
कविमन हे समय रहते तू जाग,
अति उपयोग इसका करो त्याग।



सेवाभावी

श्री दिनेश खण्डेलवाल, हजारीबाग (झारखण्ड)

• प्रतिदिन 50-60 मरीजों का निःशुल्क इलाज करते हैं, • नस और हड्डी के दर्द का इलाज, नस खेंचकर एक्स्प्रेसर पद्धति से



श्री दिनेश जी महासभा अध्यक्ष जी के आग्रह पर अपनी निःशुल्क सेवाएँ देने के लिये दि. 6-7 मई को अलवर में तथा दि. 8,9,10 मई 2020 को जयपुर आ रहे हैं।

श्री दिनेश जी खण्डेलवाल वैद्य महासभा भवन, पुलिस अकादमी रोड, शास्त्री नगर, जयपुर में 8,9,10 मई को प्रातः 9:00 से 12:00 बजे तक तथा सांय 5:00 से 7:00 बजे तक अपनी सेवाएँ निःशुल्क प्रदान करेंगे।

विरासत सबको अच्छी लगती है परन्तु वैसी विरासत जिसमें सिर्फ समय लगे परन्तु आर्थिक लाभ ना हो तो वह किसे अच्छी लगेगी। वैसा ही एक हुनर विरासत के तौर पर हजारीबाग के प्रसिद्ध व्यवसायी दिनेश खण्डेलवाल को अपने पिता स्वर्गीय श्री गया प्रसाद खण्डेलवाल से मिली है जो आज हजारीबाग (झारखण्ड) और उसके आसपास के लोगों को वरदान साबित हुई है। उस हुनर के बदौलत कितनों का कल्याण हुआ है औ प्रतिदिन अपने व्यस्त समय के बावजूद सुबह सवेरे हुनर के कमाल को दिखाकर लोगों को स्वस्थ लाभ दिनेश खण्डेलवाल दे रहे हैं। हजारीबाग में एक नाम था स्वर्गीय गयाप्रसाद जी खण्डेलवाल का जो नस और हड्डी के दर्द का इलाज नसो से करते थे। उनकी मृत्यु के बाद यह बीडा उनके पुत्र श्री दिनेश खण्डेलवाल ने उठाया है।

श्री दिनेश जी रोजाना 40 से अधिक मरीजों को देखते हैं। कई पोलियो ग्रस्त लोग भी आते हैं, कहते हैं कुछ फायदा है इसलिये आते हैं। बाकी लोग जिनके किसी भी अंग में दर्द होता है उसका इलाज नस खिंचकर एक्स्प्रेसर से करते हैं। दिनेश खण्डेलवाल ने बताया

नसों की थैरेपी से दर्द का इलाज

आरखंड हजारीबाग के रहने वाले खण्डेलवाल दिनेश खण्डेलवाल को पिता से बिछावत से नसों के थैरेपी से दर्द का इलाज का हुनर मिला और इस बिछावत को आगे बढ़ाते हुए यह रोजाना नसों की थैरेपी के जरिये रात के विभिन्न अंगों में दर्द को पाँड़न 50-60 मरीजों का उपचार करते हैं। जबरन दिनचर्या के बाबजूद समय निकालकर इस हुनर के जरिये यह लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिलाने का प्रयत्न करते हैं।



खण्डेलवाल इस कार्य को अपने माता-पिता से सीखा है। यह कोई विद्वत्प्राप्त नहीं है, लेकिन पिता से हुनर के जरिये नसों की थैरेपी से दर्द का इलाज करते हैं।

दर्द का इलाज नस से: खण्डेलवाल

खण्डेलवाल दिनेश खण्डेलवाल को पिता से बिछावत से नसों के थैरेपी से दर्द का इलाज का हुनर मिला और इस बिछावत को आगे बढ़ाते हुए यह रोजाना नसों की थैरेपी के जरिये रात के विभिन्न अंगों में दर्द को पाँड़न 50-60 मरीजों का उपचार करते हैं। जबरन दिनचर्या के बाबजूद समय निकालकर इस हुनर के जरिये यह लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिलाने का प्रयत्न करते हैं।



खण्डेलवाल दिनेश खण्डेलवाल को पिता से बिछावत से नसों के थैरेपी से दर्द का इलाज का हुनर मिला और इस बिछावत को आगे बढ़ाते हुए यह रोजाना नसों की थैरेपी के जरिये रात के विभिन्न अंगों में दर्द को पाँड़न 50-60 मरीजों का उपचार करते हैं। जबरन दिनचर्या के बाबजूद समय निकालकर इस हुनर के जरिये यह लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिलाने का प्रयत्न करते हैं।



कि पिताजी ने मुझे सिखाया है अभी तो उनकी तरह महारत हासिल नहीं कर पाया हूँ लेकिन अपने व्यवसाय का कार्य पुत्रों के जिम्मे सौंपकर रोजाना जो भी नसों के दर्द से परेशान है उनका इलाज करने का प्रयास करता हूँ। आपके दीपगुहा आवास पर अहले सुबह से लोग जमा होना शुरू हो जाते हैं और 8-9 बजे तक आप आये हुये सभी लोगों का उपचार करते हैं। इलाज करने आने वाले आसपास

के मरीज इलाज करवाकर आश्वस्त नजर आते हैं। इनका कहना है कि बगैर किसी खर्च के विशेष दर्द हुये ही हमारा इलाज हो जाता है जबकि इलाज के पहले मौत के कारण हुये परेशान हैं, हमारे लिये जानलेवा दर्द देता हैं परन्तु दिनेश खण्डेलवाल के हुनर का ऐसा एहसान मानते हैं कि यहाँ तक कोई पोलियो ग्रस्त मरीज भी कई बार अपना इलाज करवाकर उनके हुनर को असरदार मानते हैं।

आवश्यक सूचना

आदरणीय समाज बन्धु,
सप्रेम वन्दे।

हमारे समाज की विभिन्न संस्थाओं के पास बहुत सी अचल संपत्तियाँ, धर्मशाला, भवन, स्कूल, हॉस्टल, हॉस्पिटल, मन्दिर या अन्य सामाजिक संपत्तियों की जानकारी के लिये देशभर में सभी खण्डेलवाल बंधुओं से सादर निवेदन है कि वे इनकी जानकारी संक्षिप्त विवरण के साथ महासभा कार्यालय को भिजावायें। इन सभी संपत्तियों का विवरण महासभा पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा ताकि समाज बंधुओं को इसकी जानकारी मिल सके और वे इसका अधिक से अधिक लाभ ले सकें। वर्तमान में इनके जो पदाधिकारी हैं उनका नाम तथा मोबाईल नम्बर भी अवश्य लिखें ताकि उनसे संपर्क किया जा सकें। धन्यवाद सहित।

रामनिरन्जन खण्डेलवाल
प्रधान सम्पादक,
खण्डेलवाल महासभा पत्रिका

अपने गुण दोषों का आत्मलोकन करने पर खुलते हैं सफलता के द्वार



■ **घनश्याम मेठी, दौसा**

मो. 94148-42787

पृथ्वी के हर मानव में गुण व दोष दोनों का अस्तित्व होता है, पर मानव का स्वभाव है कि दूसरों के दोष तो दिखाई देते हैं पर स्वयं के नहीं और अनेक व्यक्तियों का तो हाल ही यह कि उनकी दृष्टि हमेशा दोष ही देखती है अच्छी चीज उन्हें दिखाई नहीं देती। किसी के यहाँ खाना खाने जाये तो चाहे वहाँ 20 तरह की मिठाई व 10 तरह की सब्जी हो एक से एक दिल अजीज खाना हो दोष दृष्टि वाले मनुष्य से कोई पूछेगा कि शादी में या कोई उत्सव में खाना कैसा लगा तो कहेगा कि सब कुछ ठीक था परन्तु सारी सब्जियों में नमक कम था, थोड़ी पुड़ी ज्यादा कड़क थी उसे अच्छा कहने में इतनी तकलीफ होती है कि जैसे अच्छा कहने में गाँठ से पैसे जा रहे हो। वर्षा ऋतु में वर्षा होना अनिवार्य है, पर सकारात्मक सोच वाला बालकोनी में कुर्सी लगाकर वर्षा का लुप्त उठायेगा परन्तु नकारात्मक सोच वाला कहेगा क्या आफत आ गई सारे कीचड़ ही कीचड़ हो गया। और बड़बड़ायेगा ओर भगवान को गाली देगा क्या सारे गन्दगी फैला दी, ना उसे गरीब किसानों की फसल की चिन्ता है ओर न ही लोगों के भविष्य का।

इस उदाहरण का आशय यह है कि कितना ही अच्छा काम हो चाहे अपने ही बीवी बच्चे हो पर वह अपनी नुक्ताचीनी अवश्य करेगा

उसको पर निन्दा में ऐसा आनन्द आता है जैसे गन्ने का ज्यूस पी लिया हो। परन्तु अगर श्रेष्ठता की ओर जाना है अच्छा हंसी-खुशी का जीवन बिताना है तो सबसे रामबाण उपाय यही है कि पर निन्दा स्वप्न में भी न सोचे और अपने दुर्गुणों को एक-एक करके निकालता जावे तो जीवन में रूपान्तरण होता चला जावेगा। जो लोग तुम्हारी बुराई करते थे वो भी आपके प्रशंसक हो जायेंगे। घर समाज में आपकी इज्जत बढ़ेगी। संसार का नियम है तु कहोगे तो अगला भी आप से तु ही कहेगा अगर आप कहोगे तो वो भी आप से आप ही कहेगा। जैसे एक खाली कमरे में आप जो कहोगे लोट कर तुम्हारे पास वो ही शब्द आयेंगे। तुम किसी के कंकड़ मारोगे तो वो तुम्हारे पत्थर मारेगा। आप किसी पर फूल डालोगे तो वह भी आप पर पुष्प वर्षा करेगा। मनुष्य जीवन दुर्लभ है कितने पुण्य व जन्मों के बाद आपको मिला है इसे सही कार्यों में लगाना चाहिए। आत्म सुधार, आत्म मंथन व अपनी बुराईयों को दृढ़ संकल्प से निकालते जावों तो आपका व्यक्तित्व देव तुल्य हो जावेगा। कहा गया है कि दृष्टिकोण बदले तो परिस्थिति बदलती है, दोष रहित व्यक्ति जीने का पुरा आनन्द लेता है सामाजिक पारिवारिक लोगों का प्रिय बना रहता है। सारे धर्म आधात्म की पुस्तकें सारे साधु सन्त एक ही उपदेश देते हैं कि भैया दोषों को छोड़ो सदगुणों को अपनाओ तो आप स्वयं के साथ-साथ दूसरों का भी भला कर सकोगे, सुकून की जिन्दगी जीवों मरने के बाद भी लोग आपको याद करेंगे, आपकी अच्छाईयों का लाभ आपकी आने वाली पीढ़ी को मिलेगा। कहा गया है कि मा-बाप धन न छोड़ें पर अच्छे संस्कार बच्चों डाल जायेंगे तो कमाई तो वे स्वयं ही कर लेंगे और संस्कार विहिन सन्तान को आप कितना की धन छोड़ जायेंगे तो वो अय्यासी, फिजुलखर्ची, में उडा देगी। इस लेख का यही पाठको को सही संदेश है कि समय क्षण-क्षण निकलता जा रहा है अभी से आप अपने दोषों को दृढ़ इच्छा शक्ति से विदा करते जावों ओर सदगुणों को ग्रहण करते जावों जीवन वीणा का संगीत हो जावेगा। जीवन सफल सम्पन्न व खुशहाल होता चला जावेगा।

संस्कारों के अभाव में परिवार भुगत रहे हैं दुष्परिणाम

‘संस्कार’ अन्य किसी माध्यम से नहीं मिलते हैं। इनका पोषण तीन स्थानों से ही होता है।

1. परिवार : परिवार प्रत्येक बच्चे का सबसे बड़ा संस्कार का स्कूल है। परिवार में आपसी रिश्तों एवं व्यवहार से बच्चा सबसे अधिक सीखता है। परिवार से बिना सिखाये ही बच्चा व्यवहार से माइक्रो लेवल पर सीखता है। जैसे आधुनिकता में हमारी प्रायोरिटी पत्नी और बच्चे है, उनकी जरूरत है, तो बच्चा भी यही सीख रहा है कि जन्म देने वाले माता पिता प्रायोरिटी में नहीं है। बाद में ये ही माता पिता अपने बच्चों को दोष देते हैं, कोसते हैं कि बच्चे पत्नी के गुलाम है, या हमारी परवाह ही नहीं करते जिनके लिए हमने सब कुछ किया। बच्चों ने नया कुछ भी नहीं किया केवल आपके व्यवहार से ही सीखा। बेहतर होता आप अपने माता पिता को प्रायोरिटी देते, जो आपने किया। बच्चों को अब दोष देते हो, कोसते हो, अपने बुढ़ापे और लाचारी को किस्मत का खेल बताते हो।

2. शिक्षण संस्थान : हम सभी अपने बच्चों की शिक्षा के लिए संस्थान की पॉपुलरिटी को देखते हैं और उसके लिए अपने सामर्थ्य से अधिक खर्च और दुनिया भर के अहसान लेकर सिफारिशों के बाद अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ाते हैं। लेकिन वहाँ कैसा माहौल है, शिक्षा का क्या स्तर है, कहीं हमारी संस्कृति से विपरीत तो कुछ नहीं है, इन सब बातों को कभी जानने की कोशिश ही नहीं करते हैं। कितने लोग हैं जो सबसे महत्वपूर्ण बातों को पहले देखकर स्कूल का चयन करते हैं। आज बड़े बड़े नामी स्कूलों के बच्चे बुरी आदतों, ड्रग्स का शिकार हो रहे हैं। हम फिर घुम फिरकर किस्मत को दोष देने लगते हैं। बच्चों के संस्कारों में स्कूल और उनके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा का अहम रोल है।

3. साथी या संगति : साथियों का बहुत बड़ा रोल है उनको प्रत्येक माता पिता को देखना चाहिए और अक्सर हम क्या देखते हैं, ये किसका बेटा या बेटी है और खुश होते हैं कि हमारे बच्चों के बड़े बड़े लोगों के बेटे-बेटियाँ हैं। बच्चों के साथियों की गहन जानकारी,

उनकी गतिविधियाँ, शैक्षणिक रुचि, परिवार के प्रति उनका सोच और व्यवहार में बुद्धिमत्ता जानना जरूरी है।

बच्चों में यदि संस्कारों की कमी है तो निश्चित मानिये, इसके दोषी आप स्वयं हैं और कोई नहीं। आपका परिवार और भविष्य सब कुछ बच्चों के संस्कारों से खुशहाल होगा ना कि आपकी खुशफहमियों और नासमझी से।

समझदार बनिए, अपने बच्चों को संस्कारित बनाने में थोड़ा समय और समझ का परिचय दीजिये। दूसरों की देखा देखी भेड़ चाल में आकर भविष्य खराब मत कीजिये।

आवश्यक सूचना

खण्डेलवाल वैश्य महासभा कार्यालय का स्थानान्तरण महासभा भवन में

अ. भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा कार्यालय का स्थानान्तरण खण्डेलवाल वैश्य महासभा भवन, शास्त्री नगर, जयपुर पर कर दिया गया है। महासभा के सभी कार्य महासभा भवन, शास्त्री नगर स्थित कार्यालय से सम्पादित किये जा रहे हैं। केन्द्रीय कार्यालय-गंगा मन्दिर, स्टेशन रोड, जयपुर पर श्री खण्डेलवाल वैश्य महासभा हायर एजुकेशन फण्ड से संबंधित समस्त कार्य संचालित हो रहे हैं।

नरेश रावत, दिल्ली
प्रधानमंत्री

अ.भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा, जयपुर

मानवता के आराध्य संत कवि श्री सुंदरदास जी

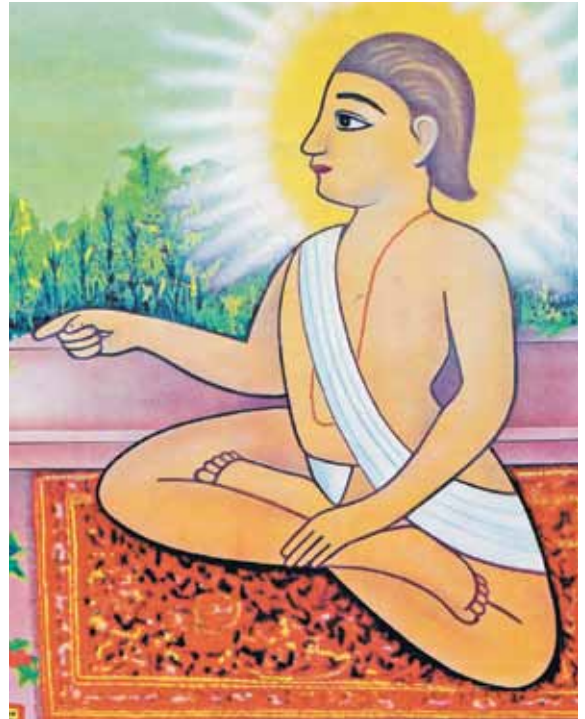


■ रामसहाय खण्डेलवाल

खेरली (अलवर) राजस्थान

रा जा अपने राज्य की सीमा में पूजा जाता है जबकि विद्वान सर्वत्र पूजे जाते हैं ऐसे थे महान कवि श्री सुंदर दास जी जिनका इस धरा धाम पर पदार्पण (1596) आज से 423 वर्ष पहले हुआ। मुझे उस समय बड़ी पीड़ा होती है जब कोई समाज बंधु उन्हें खण्डेलवाल कुलभूषण संबोधित करता है। मैं उनसे खण्डेलवाल कुलभूषण कहने का विरोधी नहीं हूँ अपितु उन्हें मानव कुलभूषण के संबोधन के पीछे समस्त मानव जाति के प्रेरणास्त्रोत के रूप में आराध्य मानता हूँ। समाज (6 लाख) में एक ऐसा महान संत पैदा हुआ जिसने अपने जीवन के 93 वर्ष की आयु तक मानव उद्धारक के रूप में अपनी भूमिका निभाई। वह हम सब के लिए कोटिशकोटि चरण बंदना के पात्र है। वर्तमान में दादू गद्दी नारायणा के पीठाधीश्वर अनन्त स्वामी गोपाल दास जी का कहना है कि वे दादू के 52 शिष्यों में प्रथम थे। रज्जब (मुस्लिम) जैसे निस्पृह संत का गले लगाना उस साम्प्रदायिक कटुता के वातावरण में दोनों वर्गों (हिंदू-मुस्लिम) के मध्य उनकी संवेदनशीलता का होना उनके मानवीय गुण का परिचायक है। उनका वह युग उथल पुथल से भरा हुआ था। पूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा का कहना था कि वह पहले संत कवि थे जिन्होंने हिंदू-मुस्लिम के बीच सौहार्दपूर्ण भावना को बढ़ावा दिया। उन्होंने फतेहपुर (शेखावाटी) के नवाब को अपने आसन के नीचे खुदा का दीदार करा दिया और वह उनका शिष्य बन गया।

दादू पंथी उन्हें सूर और तुलसी से बड़ा स्थान देते हैं। उनका एक दोहा प्रचलित है यथा - दादू दीन दयाल के शिष्य दूई पचास कोई उडगन कोई इंदुहै दिनकर सुंदर दास। इसके साथ हम इस दोहे पर भी अपनी दृष्टि डाले जिसमें कहा गया है सूर सूर तुलसी शशी उडगन केशव दास अब के कवि खद्योत सम जह तंह करत प्रकाश। इस दोहे में तुलसी की तुलना शशी (चंद्रमा) से की गई है। जबकि दादू



श्री श्री 1008 संत सुंदरदास जी

पंथियों द्वारा इनकी तुलना सूर्य (दिनकर) से की है। साथ ही इन्होंने उन्हें द्वितीय शंकराचार्य की उपाधि से विभूषित किया है। मुझे इस बात का दुख होता है कि हमारा समाज उन्हें वह स्थान नहीं दे पाया जिसके वह पात्र थे। जैन समाज के प्रयास से भारत सरकार ने एक ऐसी पनडुब्बी खरीदी जिसका नाम अरिहंत है तथा अग्रवाल समाज के अग्रसेन जी के विचारों का प्रचार प्रसार के लिए भारत सरकार ने 350 करोड़ रुपए से एक जलपोत खरीदा। क्या हम इनसे पीछे नहीं हैं। आज हम देखें तो ज्ञात होगा कि वैश्विक स्तर पर उनके जीवन की यशोगाथा गैर खण्डेलवालों ने प्रतिपादित की है यथा आचार्य रजनीश (ओशो) आचार्य जगन्नाथ, डॉ. रमेश चंद्र मिश्र, राम चंद्र शुक्ल, पुरोहित हरि नारायण, दादू कालेज के प्राचार्य बजरंग दास, डॉ उमा पुरी, स्वामी राघवदास आदि हैं।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने उन मुस्लिम कवियों के प्रति लिखा है जिन्होंने

हिंदी की गरिमा अपनी लेखनी से बढ़ाई जैसे रहीम, रसखान, जायसी आदि के संदर्भ में उनका कहना था - इन हरिजन मुसलमान पे कोटिश हिंदूबारिये। उसी प्रकार हम उन रचनाकारों के ऋणी हैं जिन्होंने संत श्री के-पावन चरित्र एवं कृतित्व को परिभाषित किया।

उनके द्वार प्रतिपादित कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है:-

सुंदर दास जी ने समाज में जो नैराश्य की भावना व्याप्त थी उसे दूर किया। उन्होंने हिंदी साहित्य में संत काव्यधारा के अंतर्गत निर्गुण काव्यधारा प्रवाहित की

- उनके काव्य की भाषा सरल बोध गम्य है।
- इनके काव्यों की भाषा हिंदी - पंजाबी - राजस्थान - गुजराती आदि से संबंधित है।
- इन्होंने अपने प्रयास से अनेक हितकारी कार्य किए यथा कुआ-मठ-पाठशाला आदि के निर्माण के साथ हरिजनों को प्रवेश दिलवाया।
- वे अस्पृश्यता के विरोधी थे जिस प्रकार डॉ भीम राव अम्बेडकर गांधी जी ने जो अछूतोंद्वारा का काम किया। उसे उन्होंने 16वीं शताब्दी में किया।
- वे व्यक्ति के कर्म प्रवृत्त होने पर बल देते थे।
- अपने महाकाव्य 'ज्ञान समुद्र' के द्वारा योग विषयक जानकारी प्रस्तुत की।
- उनका कहना था कि किसी व्यक्ति को महात्मा तभी माना जा सकता है जब उसकी आत्मा पवित्र हो।
- उन्होंने जन समाज को सदाचार का उपदेश दिया।
- उन्होंने नश्वरता को अनिवार्य बताया। सभी का अंत हुआ है चाहे मुहम्मद साहब ही क्यों न हो।
- वे हिंदुओं के बाह्य आडंबरों और पाखंडों के खिलाफ थे।
- उन्होंने अपने प्रबल विरोधी गरीब दास के संबंध में आलोचना का एक शब्द नहीं लिखा है। पर निंदा में उनका विश्वास नहीं था।
- वे बैरागी होने के कारण नारी के प्रति उदासीन थे।
- उन्होंने बताया कि शरीर नश्वर तथा आत्मा अमर है।
- तीर्थ यात्रा के विरोधी थे इसका कारण पंडों द्वारा तीर्थ यात्रियों को धर्म के नाम पर तंग किया जाना था।
- उनकी गुरु के प्रति अपार श्रद्धा थी। वे गुरु में ब्रह्म का स्वरूप देखते थे।

वैश्विक स्तर पर अणुशक्ति का उपयोग होने पर मानव जाति का अस्तित्व मिट जाएगा। विश्व मानवता की संत श्री के शांति परक उपदेश ही रक्षा कर सकते हैं। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उनकी विचार धारा के प्रचार प्रसार में अपनी भूमिका निभाए तथा उनकी वाणी को जन जन तक पहुंचाने में अपने जीवन का ध्येय बनाएं। अणुबम के निर्माता आइंस्टीन से जब पूछा गया कि तृतीय महा युद्ध होगा अथवा नहीं (अब तक दो महा युद्ध 1919-1939) तो उन्होंने उतर दिया यह मैं नहीं कह सकता इतना जानता हूँ चौथा महा युद्ध ईट और पत्थरों से लड़ा जाएगा। अतः तीसरे महा युद्ध में मानव जाति का अस्तित्व ही मिट जाएगा। दूसरे महा युद्ध (1939) से पूर्व एक पत्र जर्मनी के हिटलर को गांधी जी ने लिखा कि तुम दुनिया को युद्ध में क्यों धकेल रहे हो तो हिटलर ने उन्हें उत्तर दिया कि यदि

तुम को मानवता की इतनी चिंता है तो हिमालय पर चले जाइये। यह दुनिया तुम्हारे रहने योग्य नहीं है। वे एक ऐसे रचनाकार थे जिनकी रचनाएं (दो महाकाव्य-ज्ञान समुद्र, सुंदर विलास के अतिरिक्त 46 अन्य ग्रंथ) सर्वकालिक हैं। उनके साहित्य में कहीं जातिवाद की गंध नहीं आती अपितु समस्त मानवता के कल्याण को अपनी रचना का आधार मान कर चले। उनकी साहित्यिक कृतियों द्वारा समाज भी गौरवान्वित हैं।

साथ ही हम अपने जीवन का यह ध्येय बनाएं जब हम परस्पर मिले तो जय सुंदर दास जी के संबोधन से उसी प्रकार अभिवादन करें जिस प्रकार जैन जयजिनेन्द्र तथा दलित वर्ग जय भीम के शब्दों से परस्पर मिलने पर अभिवादन करता है। हम आज के दिन यह बात हृदयंगम करें। कोई जाति संख्या बल से श्रेष्ठ नहीं होती अपितु उस जाति के अंतर्निहित गुण उसे श्रेष्ठ बनाते हैं। यह हम उन जातियों से सीखें जिनका संख्या बल नाम मात्र का है यथा पचास हजार पारसी (भारत), 86 लाख यहूदी (इजरायल) के गुणों का लोहा समस्त विश्व स्वीकार करता है। पिछले दिनों इजरायल के प्रधान मंत्री नेतान्याहू भारत आए थे तब उन्होंने कहा था कि दुनिया शक्ति की भाषा समझती है। इस संबंध में रामधारी सिंह दिनकर की यह कविता सटीक बैठती है:- शांत सोहती उस भुजंग को जिसके पास गरल है।

उस महा मानव का जिसने हमारे ज्ञानचक्षु खोले उन्होंने 93 वर्ष की आयु में सन् 1689 में परम पद प्राप्त किया। जब वे मरने लगे तो उनके शिष्यों ने वैद्य लाने की बात कही तब वह बोले - वैद्य हमारे राम जू - औषध है हरी नाम - सात वर्ष सौ में घटें इतने दिन की देह। पुनः मैं उनके श्री चरणों में कोटि कोटि नत मस्तक हूँ।

आवश्यक सूचना

अ.भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा गंगा मन्दिर, स्टेशन रोड, जयपुर

अ.भा.खण्डेलवाल वैश्य महासभा के समस्त पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य तथा समिति संयोजक व सदस्यों से आग्रह है कि आप अपनी वचन राशि तथा महासभा विधान अनुसार कार्यकारिणी सदस्य सहयोग राशि का एक तिहाई भाग महासभा कोष में जमा करवाकर सहयोग करें ताकि महासभा की जनकल्याण, महिला कल्याण सहायताये, छात्रवृत्ति तथा मैडीकल सहायतायें समय पर भिजवाई जा सकें।

धन्यवाद सहित।

आपका स्नेही

नरेश रावत, दिल्ली

प्रधानमंत्री

अ.भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा, जयपुर

पर्यावरण वृक्षों का महत्व



■ सिद्धार्थ खण्डेलवाल
चण्डीगढ़

दे श में पर्यावरण की स्थिति ठीक नहीं है। इसके फलस्वरूप देश को आपदाओं को सहना पड़ रहा है। पर्यावरण से संबंधित कई अन्तर्राष्ट्रीय रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि भारत के कई शहर दुनिया में सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में शामिल हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की प्रकाशित रिपोर्ट के आधार पर विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित 15 शहरों में से 14 भारत के हैं जिनमें वाराणसी, कानपुर, लखनऊ, पटना, तथा गया शामिल हैं। देश की राजधानी दिल्ली की हालत गैस चैम्बर जैसी है।

मेडिकल जर्नल 'द लांसेट' की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में वायु प्रदूषण के कारण प्रतिवर्ष दस लाख से ज्यादा लोग मौत के मुंह में समा जाते हैं। कार्बन उत्सर्जन की दृष्टि से दिल्ली दुनिया के 30 शीर्ष शहरों में सम्मिलित है। कूड़ों के ढेर जहरीली गैसें, और औद्योगिक इकाईयों से निकलते जहरीले धूएँ के अलावा सड़कों पर वाहनों की बढ़ती संख्या कार्बन उत्सर्जन का बड़ा कारण है। आज आवश्यकता इस बात की है लोग अपने निजी वाहनों की तुलना में सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग करें।

पौधरोपण को बढ़ावा देकर हरियाली बढ़ानी होगी। पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए कुछ भी प्रयास नहीं किये जा रहे हैं। वृक्षों का विनाश तेजी से जारी है। आज दीर्घअवधि पेड़ यथा नीम - पीपल - बरगद आदि के पेड़ नहीं उगाये जाते। यात्रा मार्ग को चौड़ा मार्ग

बनाने के लिए बेरहमी से हरे-भरे पेड़ काट दिये जाते हैं। हरियाली की कमी के कारण तापमान में भारी वृद्धि मानव को चुनौती है। असम-बंगाल बिहार आदि राज्यों में आई बाढ़ बड़ी संख्या में व्यक्तियों के जीवन को लीन गई। वृक्षों का केवल भावनात्मक और आध्यात्मिक दृष्टि से ही महत्व नहीं है बाढ़ के खतरो से बचना भी हैं। वृक्ष काटे जाने से पहाड़ों में भूस्खलन की समस्या पैदा होती है।

सन् 1999 में सघन वन 11.48 फीसदी थे जो 2015 में घट कर मात्र 2.61 प्रतिशत रह गये पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ों का सर्वाधिक महत्व है। 1973 में सुन्दर लाल बहुगुणा के नेतृत्व में चिपको आन्दोलन के द्वारा पेड़ों के संरक्षण की दिशा में कुछ काम हुआ। विकास की दौड़ में हमने पर्यावरण को भुला दिया है। बिगड़ते पर्यावरण के लिए हम सब दोषी हैं। वन जीवों पर बुरा असर पड़ा है। जो सर्प हमारी खेती के लिए उपयोगी थे रासायनिक खाद के प्रयोग से उनका अस्तित्व मिटने लगा है। प्लास्टिक का प्रयोग पर्यावरण के लिए एक चुनौती है। आज आवश्यकता इस बात की है बिगड़ते पर्यावरण

के लिए सरकार को दोष देने से काम नहीं चलेगा। हमें भी इसकी जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी।

पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से वृक्षों का सर्वाधिक महत्व है। जिस तरह मंदिर में भगवान की पूजा करते हैं उसी तरह वृक्ष की पूजा करने की आदत डालनी पड़ेगी। केवल पीपल के पेड़ की पूजा करना ही धर्म नहीं है बल्कि प्रत्येक पेड़ पौधे की पूजा हमारा धर्म होना चाहिए। वृक्ष हमें केवल फल ही नहीं देते बल्कि छाया भी देते हैं और पक्षियों को आसरा देते हैं हमें आक्सीजन देते हैं तथा वायु को शुद्ध करते हैं सूखे पत्तों डठलों से खाद बनाई जाती है। पर्यावरण की अनदेखी सभी पृथ्वी के जीवों के लिए खतरे की घण्टी है। यद्यपि हमने भगवान को नहीं देखा परन्तु उस की प्रतिदिन पूजा करते हैं। इसी तरह पृथ्वी पर जीवित देव यानी पेड़ पौधों की प्रतिदिन पूजा करनी होगी ये हमारे लिए साक्षात् देव हैं ये इतने सरल हैं हमें इन पर घी के दीये नहीं जलाने पड़ते। न प्रसाद चढ़ाना पड़ता है। अब वृक्ष को भगवान के रूप में स्वीकार करना होगा।

हमें पेड़ के अमूल्यवान महत्व को समझना होगा एक सामान्य पेड़ सालभर में करीब 20 किलो धूल सोखता है जो हमारे पर्यावरण

को प्रभावित करती है। हर साल 700 किलोग्राम आक्सीजन का उत्सर्जन करता है।

प्रतिवर्ष 20 टन कार्बनडाइआक्साइड को सोखता है गर्मियों में एक बड़े पेड़ के नीचे औसतन 4 डिग्री तक तापमान कम रहता है पर्यावरण का अस्तित्व सही अर्थों में वृक्षों पर टिका हुआ है। पेड़ जहरीली धातुओं के मिश्रण को सोखने की क्षमता रखता है। वृक्ष हर साल करीब एक लाख वर्ग मीटर दूषित हवा को फिल्टर करता है। पेड़ों का घर के समीप होना उसकी शोभा है।

विस्कांन्सिन विश्वविद्यालय ने बताया है कि जिनके घरों के आस-पास पेड़ होते हैं उन्हें अवसाद की आशंका कम होती है। कनाडा के जनरल सांइटिफिक रिपोर्ट्स के अनुसार घर के करीब दस पेड़ है जो जीवन को 7 साल बढ़ा देते हैं।

इलिनॉय यूनिवर्सिटी ने रिसर्च में बताया है कि घर के पास पेड़ है तो नींद अच्छी आती है विशेषकर वृद्धावस्था में।

आज वर्षा की कमी देश के एक बड़े भू भाग को सूखा की चपेट में लिए हुए है। जहां वृक्ष होते हैं वहां वर्षा सर्वाधिक रूप में देखने को मिलती है।



वधू चाहिये

- अमित गुप्ता जन्म 05/09/1990 कद 5'11" शिक्षा बी.टेक., एम.टेक गोत्र मेठी व बूसर सम्पर्क सूत्र-मो. 9414595864 कोटा (राज.)
- अर्पित खण्डेलवाल जन्म 25/04/1991 कद 5'8" शिक्षा सी.ए., सी.एफ.ए(यू.एस) गोत्र माली व बाजरगान सम्पर्क सूत्र-मो. 9024346750/6375361906 जयपुर (राज.)
- आकाश गुप्ता जन्म 11/12/1991 कद 5'6" शिक्षा बी.कॉम., एम.कॉम गोत्र राजोरिया व कायधवाल सम्पर्क सूत्र-मो. 9024061489/6376921865 जयपुर (राज.)
- अंकित खण्डेलवाल जन्म 07/06/1991 कद 5'4" शिक्षा बी.कॉम गोत्र जसोरिया सम्पर्क सूत्र-मो. 9358077294/9410825865 बरेली (उ.प्र.)
- किशन गुप्ता जन्म दि. 7 जुलाई, 1991 कद 5'5" शिक्षा एम.ए. गोत्र डंगायच व कूलवाल, खूटेडा सम्पर्क सूत्र-8432372637
- अतुल खण्डेलवाल जन्म दि. 8 जनवरी, 1983 कद 5'8" शिक्षा बी.कॉम, गोत्र खटोरिया व कूलवाल, सम्पर्क सूत्र-70142 44585/95218 35745



वर चाहिये

- ज्योति गुप्ता जन्म 05/08/1990 कद 5'3" शिक्षा बी.कॉम., सी.ए इन्टर गोत्र रावत व ठाकुरिया सम्पर्क सूत्र-मो. 9826431001/7771949000 ग्वालियर (म.प्र.)
- मोनिका गुप्ता (दृष्टिबाधित-रेंटिनाइटिस पीगमेंटोसा) जन्म 23/11/1992 गोत्र धोकुरिया व लाभो सम्पर्क सूत्र-मो. 9414641647/7993359075 धानागाजी (अलवर-राज.) (घर के कार्य में दक्ष)
- अनु खण्डेलवाल जन्म दि. 13 नवम्बर, 1989 कद 5'5" शिक्षा बी.टेक, गोत्र वैद व माचीवाल सम्पर्क सूत्र-94616 98477/87642 14988

???



‘जीवन निर्माण’ में

स्वाध्याय का महत्व एवं आवश्यकता

‘पुस्तकें जीवन्त देव प्रतिमाये होती हैं जिनके अध्ययन व मनन से तत्काल ज्ञान का प्रकाश मिलता है।’

सद्साहित्य का अध्ययन आज के समय की महती आवश्यकता हैं कि हम अपने लिये प्रतिदिन समय निकालकर अच्छे साहित्य का अध्ययन अवश्य करें, साथ ही परिवार में महिलाओं व बच्चों में श्रेष्ठ साहित्य/पुस्तकें पढ़ने की आदत को विकसित करें ताकि हम स्वअनुशासन में बंधकर स्वनिर्माण के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण की ओर बढ़ सकें।



► पं. श्रीराम शर्मा ‘आचार्य’

स्वा

ध्याय से ज्ञान बढ़ता है। जो व्यक्ति पुस्तकें पढ़ता है, वह उच्चतम ज्ञान के साथ अटूट संबंध स्थापित करता है। सुशिक्षा, विधा, विचारशीलता, समझदारी, सुविस्तृत जानकारी, अध्ययन, चिंतन, मनन, सत्संग तथा दूसरों के अनुभव द्वारा हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने को सुसंस्कृत बना सकता है। मनुष्य स्वयं अनेक शक्तियों को लेकर भूतल पर अवतरित हुआ है। जन्म से प्रायः हम सब एक समान ही हैं। अंतर केवल विकास का ही है। स्वाध्याय द्वारा ही हमारा विकास संभव है। स्कूल, कॉलेज में स्वाध्याय करने के उचित साधन उपस्थित नहीं किये जाते हैं। स्वाध्याय अर्थात् स्वयं अपने परिवार और उद्योग से शिक्षित होकर संसार में महात्मा, भक्त, ज्ञानी, तपस्वी, त्यागी, गुणी, विद्वान, महापुरुष, नेता, देवदूत, पैगम्बर तथा अवतार हुये हैं। ज्ञान से ही मनुष्य तुच्छ पशु से ऊँचा उठाकर एक सुदृढ़-असीम शक्तिपुंज, नाना दैवी संपदाओं तथा कृत्रिम साधन से सम्पन्न अधीश्वर बनाया है। जीवन का सुख इस विधाबल पर ही बहुत हद तक निर्भर है।

सत्साहित्य का अध्ययन-जीवन उत्कर्ष के लिये उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार की जीवन रक्षा और शरीर निर्वाह के लिये भोजन। अन्य प्राणी अपना स्वाभाविक आहार प्राप्त करके ही शरीर का पोषण कर लेते हैं किन्तु मनुष्य बोद्धिक प्राणी है इसलिये उसे शरीर का पोषण प्राप्त करने के साथ-साथ बुद्धि का

पोषण भी चाहिये। बोद्धिक आहार भी उसके अस्तित्व की रक्षा और व्यक्तित्व के विकास के लिये अनिवार्य आवश्यकता हैं।

बहुधा लोग यह कर कर साहित्य से सम्पर्क बनाये रखने की आवश्यकता टाल देते हैं कि पुस्तकें पढ़ना तो विद्यार्थियों का काम है या जिनका लक्ष्य विद्वान बनना है उन्हें पुस्तकें पढ़ना चाहिये। यह सोचना अपने विकास के आधार को नष्ट कर देने जैसा है। स्कूलों से पढ़कर आवश्यक बातें सीखी और जरूरी जानकारीयां प्राप्त की जा सकती हैं किन्तु स्कूल कॉलेज छोड़ देने के बाद पुस्तकों से सम्बन्ध तोड़ देना वैसा ही जैसे बचपन में खाने पीने के बाद जवान हो जाने पर भोजन लेना ही बन्द कर देना। बचपन की उम्र बाढ़ की उम्र होती है, इस उम्र में शरीर का अंग अंग बढ़ता और पुष्ट होता है इसलिये बचपन में पौष्टिक आहार लेना चाहिये। किन्तु शरीर की बाढ़ एक उम्र में रुक जाती है और फिर कद, ऊंचाई, लम्बाई एक सीमा पर पहुँच कर रुक जाते हैं। परन्तु शरीर का पोषण तब भी आवश्यक होता है और उसके लिये भोजन भी करना पड़ता है, व्यायाम भी करना पड़ता है। सोने जागने का नियमित क्रम रखना तब भी आवश्यक होता है। स्कूली पढ़ाई को बचपन में मिलने वाला प्रारम्भिक और पौष्टिक आहार कहा जा सकता है वह स्कूली शिक्षा पूरी कर लेने के बाद अनावश्यक नहीं हो जाता। शिक्षा पूरी कर लेने के बाद भी पुस्तकों से, साहित्य से, ज्ञानराशि से निरन्तर अपने मस्तिष्क की क्षुधा मिटाते रहना आवश्यक हो जाता है।

स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद ही यदि पुस्तकों से सम्पर्क तोड़ दिया जाय तो पढ़ी हुई विधा भी विस्मृत हो जाती है तब नया ज्ञान प्राप्त करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। कहीं भी और कभी भी यह देखा जा सकता है कि कक्षा पास कर लेने और उपाधि प्राप्त कर लेने के बाद यदि विद्यार्थी, वकील अथवा डॉक्टर आदि अपना स्वाध्याय बन्द कर देते हैं तो वे आगे चलकर सफल नहीं हो पाते। संसार की विचारधारा को मोड़ देने वाले लेखक और पत्रकार प्रतिदिन घण्टों स्वाध्याय करते हैं। क्योंकि ज्ञान की जन्मभूमि इस संसार में नित्य प्रति नई-नई जानकारीयां, नये-नये विचार, नये तथ्य, नये तर्क और विधाओं का जन्म होता रहता है। जो व्यक्ति पुस्तकों से-साहित्य से नियमित सम्पर्क बनाये रहते हैं उन्हें पता रहता है कि संसार में कहां क्या हो रहा है। कौन सी पुरानी मान्यतायें बदल रही हैं। आज की परिस्थितियों में किस स्तर का समाधान व्यवहारिक है संसार में कौन सी नई प्रतिस्थापनायें हो रही हैं। उसे यह भी ज्ञान रहता है कि इन बदलती परिस्थितियों में उसका स्थान और क्या कर्तव्य है। एक जागरूक नागरिक की भूमिका निभा पाना तभी संभव है जबकि अपने आस-पास होते रहने वाले परिवर्तनों और चारों ओर होने वाली हलचलों का ज्ञान बना रहें।

सत्साहित्य अपने आप में एक विकसित मस्तिष्क होता है। अच्छी पुस्तकों का महामानवों के-महान विचारकों के मस्तिष्क का ग्राफ कहा जा सकता है, मिल्टन ने कहा है 'अच्छी पुस्तकें एक महान आत्मा का जीवन रक्त हैं क्योंकि उसमें उनके जीवन का विचार सन्निहित होता है।' व्यक्ति तो मर जाते हैं लेकिन ग्रन्थों में उनकी आत्मा बसती है। इसलिये ग्रन्थों को सजीव महापुरुष भी कहा जाता है। प्रसिद्ध विचारक लिटन ने यह सिद्धान्त इन शब्दों में व्यक्त किया है - 'ग्रन्थों

में आत्मा होती है। सद् ग्रन्थों का कभी नाश नहीं होता।

अच्छी पुस्तकें अच्छे विचार होते हैं। अच्छे विचार उदात्त भावनायें भव्य कल्पनायें जहां भी हैं वहीं स्वर्ग का सा वातावरण बनता है। और अच्छी पुस्तकों के अभाव में मनुष्य उस ज्ञान राशि से वंचित रह जाता है, फलस्वरूप मानसिक अस्तित्व निष्प्राण रह जाता है। इसलिये सिसरो ने कहा है 'ग्रन्थ रहित कमरा आत्मा रहित देह के समान है।' जीवन को विकास और प्रगति की दिशा में अग्रसर करने के लिये पुस्तकों का साथ होना आवश्यक है। क्योंकि सद्ग्रन्थों के द्वारा जीवन को मार्गदर्शक प्रकाश स्त्रोत मिलता है। वस्तुतः संसार के भीषण सागर में डूबते उतराते सभी मनुष्यों के लिये पुस्तकें उस प्रकाश स्तम्भ की तरह सहायक होती हैं जैसे समुद्र में चलने वाले जहाजों को मार्ग दिखाने वाले प्रकाश ग्रह।

महात्मा गांधी ने कहा है 'अच्छी पुस्तकें पास होने पर भले मित्रों की कमी नहीं खटकती वरन् मैं जितना अध्ययन करता हूँ उतना ही अच्छी पुस्तकें मुझे उपयोगी मित्रों की तरह मालूम होती हैं।' मनुष्य का ज्ञान-संसार की ज्ञानराशि आंख्य अनेकताओं से भरी पड़ी है। मनुष्य का मस्तिष्क ही इतने अधिक विचारों से भरा रहता है कि क्षण-क्षण नये विचारों की लहर उत्पन्न होती रहती है। इन अनेकताओं का परिणाम होता अन्दर और बाहरी जीवन में अनेकों संघर्ष। विचार संग्राम में पुस्तकें मनुष्य के लिये प्रभावशाली शस्त्र सिद्ध होती हैं। एक व्यक्ति का ज्ञान सीमित और एकांगी हो सकता है लेकिन सद्ग्रन्थों का अध्ययन अपनी समस्याओं, अन्तर्द्वन्द्वों और परिस्थितियों का स्वयं समाधान खोज सकता है। विशेषतः विचार संघर्ष में पुस्तकें सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

सद्ग्रन्थों का अध्ययन मनुष्य के विचारलोक में गति प्रदान कर सकता है। मनुष्य उस समय दृश्य जगत, शरीर और यहाँ के कई व्यापार भी भूल जाता है। विचार जगत में प्रवेश और निवास का यह आनन्द योगियों की समाधि अवस्था के आनन्द जैसा ही होता है। इस स्थिति में मनुष्य दृश्य जगत से उठकर अदृश्य संसार में, सूक्ष्म लोक में विचरण करने लगता है और वहाँ कई विचारों का स्पर्श प्राप्त करता है। यह ठीक उसी तरह है जैसे योगी दिव्य चेतना का सान्निध्य प्राप्त करता है। एकाग्रचित्त से पुस्तकों का अध्ययन ऐसी ही साधना है जिससे हमारे जीवन में पर्याप्त विकास प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्येक विचारशील और ज्ञान प्रेमी व्यक्ति को चाहिये कि वह जीवन में अन्य सामग्री की तरह अच्छी पुस्तकों का भी संग्रह करें। जीवन के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालने वाले विविध विषयों की अच्छी पुस्तकें खरीदने के लिये बजट सुविधानुसार आवश्यक राशि रखनी चाहिये। कपड़े, भोजन और मकान की तरह ही हमें पुस्तकों के लिये भी आवश्यक खर्चों की तरह ध्यान रखना चाहिये।

इसके साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिये कि पुस्तकें कमरे को सजाने के लिये अथवा प्रदर्शनी लगाने के लिये न खरीदी जाये वरन् उनका नियमित अध्ययन भी जीवनक्रम में सम्मिलित रखा जायें। पुस्तकें समाज का दर्पण ही नहीं हैं वे हमारी मार्गदर्शक एवं नियन्ता भी हैं। इतिहास का रूख मोड़ देने वाली घटनाचक्रों का यदि अध्ययन किया जाये तो प्रतीत होगा कि किसी भी महत्वपूर्ण परिवर्तन



में-सामाजिक क्रान्ति में उस समाज के साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज संसार के अधिकांश देशों में प्रजातन्त्र हैं। किसी जमाने में सारा संसार राजन्तत्रात्मक शासन प्रणाली से संचालित था। प्लेटो ने एक पुस्तक का सृजन किया 'रिपब्लिक' जिसमें कि प्रजातन्त्र शासन पद्धति का प्रतिपादन किया गया था। उस पुस्तक से उद्धृत प्रजातन्त्र की विचारधारा ने संसार को आच्छादित कर दिया। कार्लमार्क्स की 'केपीटल' ने श्रमजीवी समानतावादी विचारों का एक समग्र जीवन दर्शन ही प्रतिपादित किया और वह पुस्तक आज भी साम्यवादियों की प्रेरणा हैं। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में गीता, आनन्दमठ और रामायण जैसे ग्रन्थों ने किस प्रकार क्रान्तिकारियों ने किस प्रकार क्रान्तिकारियों को प्रेरित किया और उन्हें दिशा दी। इसका उदाहरण पुराना नहीं है। साहित्य का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान हैं और वह व्यक्ति तथा समाज के जीवन को अनिवार्य रूप से प्रभावित करता है। उसका अध्ययन दूसरे नियमित कार्यक्रमों की तरह ही दिनचर्या का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिये। पुस्तकों का मात्र संग्रह कर लेने से उनका लाभ नहीं मिल जाता है। उनका लाभ तभी मिलता है, उनसे सम्पर्क स्थापित करने और अध्ययन के क्रम को नियमित बनाने पर।

यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि पुस्तकों चयन करने में बड़ी सूझ-बूझ और सतर्कता बरती जाये। कारण कि विचार एक शक्ति हैं। उस शक्ति के सत्परिणाम जीवन का ऊँचा उठा सकते हैं तो उनकी विषाक्तता मनुष्य के पतन के गर्त में धकेल सकती हैं। अच्छे विचारों का उत्कृष्ट परिणाम ही श्रेष्ठ हो सकता हैं। और विचार शक्ति का जागरण साहित्य से होता हैं। साहित्य में ही वह शक्ति होती है जो व्यक्ति की जीवन दिशा को बदलकर समाज की रूपरेखा भी बदल डालती हैं। इसलिये विचारक मनीषियों ने कहा कि-किसी समाज की शक्ति और योग्यता की परख उसके साहित्य से ही होती हैं। विचारकों को ऊँचा उठाने वाला साहित्य ही अपने पास रखा जाये और उसी से सम्पर्क-सम्बन्ध स्थापित किया जायें तो आत्मोन्नति का प्रयास सफल होना सुनिश्चित हैं।

इसलिये पुस्तकें माँ सरस्वती की साकार प्रतिमा होती है जिनके अध्ययन करने से व्यक्ति ज्ञान के क्षेत्र में निपुणता प्राप्त करता हैं। लक्ष्मी जी का भले अपने आप में अस्तित्व हो परंतु लक्ष्मी जी की प्राप्ति का स्रोत विद्या की देवी सरस्वती ही हैं। सद्साहित्य के माध्यम से ही हम बालकों को नैतिक आचरण की शिक्षा दे सकते हैं। यदि बालकों में हमने अच्छी पुस्तकों के अध्ययन की आदत विकसित कर दी देश के श्रेष्ठ नागरिक बनकर राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनेंगे।

कविता



■ अशोक खण्डेलवाल (खूंटेटा)

नागपुर

‘माँ’

जब जब याद किया तुझे मैं
आनन्द अलौकिक पाया हैं।

तेरें आँचल की छाव में
अनुभूति स्वर्ग की पाया है।

जब जब उदास हुआ है यह दिल
सकून गोद में तेरी पाया हैं।

कभी ना सोचा था बिछड़ूंगा
तू निष्ठुर आँचल छुड़ाकर चली गई।

अब किसको माँ माँ कहूंगा मैं
माँ ममता कहाँ से लाउंगा मैं।

हर दुःख मेरा तूने झेला
हर सुख तेरा तूने मुझे दिया।

अरे जालिम जीतेजी माँ को दुःख देने वालों
देखो एक बार व्यथा उन माँ बिन बच्चों की।

धन्य है तू माँ तेरी ममता
कर्ज ना तेरा उतार सका।

मंदिर जाकर क्यों मैं शीश झुकाऊं
जब ईश्वर स्वयं ही मेरे घर में हैं।

ईश्वर की अप्रतिम रचना है माँ
हर बच्चे के लिये अनमोल है माँ।



UNDER THE SUN AQUARIUM

(A UNIT OF MANSHAPURN KANNIMATA ROPEWAY PVT. LTD.)

Near Fishing Landing Centre, 1 Km from Bisalpur dam Towards Toda, Bisalpur

TIMINGS : 10 AM TO 6 PM



RAJASTHAN'S NEW TOURIST DESTINATION & PICNIC SPOT

राजस्थान का नया ट्यूरिस्ट डेस्टिनेशन व पिकनिक स्थल

- Large aquatic exhibits and Fresh water ponds
- More than 50 species of fresh water fish
- Hi Tech and Modern Ornamental Fish Hatchery
- Beautiful landscape with lush gardens
- Garden and rooftop restaurants
- Scenic, Ocean like beauty
- Located near one of the biggest dam - Bisalpur Dam
- Thousands of year old Shiv Temple nearby, where Ravana used to worship Shiva
- Provision for boating in coming days
- Provision for aqua sports in coming days
- Provision for fishing sports in coming days
- Free Parking
- Can accomodate 3000 people at a time .
- Large Party Garden
- Cafeteria
- Attractive Fountain



CONTACT US :

Website : www.underthesun.in

Mob No.: 9610751178

अर्थात् रिश्ते अंदरूनी एहसास, आत्मीय अनुभूति के दम पर ही टिकते हैं। जहाँ गहरी आत्मीयता नहीं, वो रिश्ता शायद नहीं परन्तु दिखावा हो सकता है।



■ गोपाललाल नाटाणी

जवाहर नगर, जयपुर

आत्मीयता

हुनिया में पहला कदम रखने के साथ ही हमें जो कुछ प्राप्त होता है वह होता है- रिश्ते। माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन से लेकर ढेरों रिश्ते। इन्हीं रिश्तों के बीच हम पलते-बढ़ते हैं। समयानुसार हमें धीरे-धीरे इन रिश्तों की अहमियत की भी जानकारी होती है। रिश्तों का अहसास होता है और साथ ही ज्ञात होता है रिश्तों का महत्व। हम सबके बीच ही हमें रिश्तों की गहनता का भी अहसास होता है। ज्ञात होता है कि रिश्तों में कुछ खास होता है। रिश्तों में ऊर्जा होती है, रिश्तों में खिंचाव होता है, आकर्षण होता है। रिश्तों में एक आत्मीय भाव का भी अहसास होता है। इतना ही नहीं साथ ही हमें यह भी पता चलता है कि रिश्तों में रूखापन भी होता है, रिश्ते कोरे भी होते हैं, नीरस रिश्ते भी होते हैं। तो यह जो रिश्तों का हमारे साथ भण्डार जुड़ा है उन रिश्तों में भाव के साथ-साथ और भी बहुत कुछ होता है। रिश्तों के साथ कर्तव्य और दायित्व का भी जुड़ाव होता है। यह रिश्तों का वैविध्य ही परिवार नामक संस्था का आधार है, रीढ़ की हड्डी है। रिश्ते परिवार में मजबूती लाते हैं जो सुगंध भी भरते हैं। रिश्तों की खासियत भी होती है। इनका अपनापन और आत्मीयता इन रिश्तों को खास बना देते हैं। रिश्तों का एक अर्थ-आनन्द, उत्साह और ऊर्जा भी है। जब रिश्ते अपनापन और आत्मीयता से लबालब होते हैं तो परिवार में जीवन में नवाचार का संचार करते हैं। यही इन रिश्तों की मर्यादा भी है। रिश्ते सिर्फ खून से ही नहीं बनते। खून से इतर रिश्ते मित्रता के भी होते हैं। हाँ, आत्मीयता और अपनापन तत्व यहां भी अपनी भूमिका निभाते हैं। देखा जाए तो रिश्ता किन्हीं दो या दो से अधिक प्राणियों में होता है लेकिन रिश्तों में व्यक्ति कभी महत्वपूर्ण या प्रिय नहीं होता। उसकी आत्मीयता ओर अपनापन उसे प्रिय करते हैं। रिश्तों की खूबसूरती और अहमियत को

रेखांकित करता रामायण का एक छोटा सा प्रसंग है, जो रिश्तों की महत्ता को बताता है ओर जिसमें हमें सीख मिलती है एहसास की।

श्रीराम, लक्ष्मण एवं सीता मैया चित्रकूट पर्वत की ओर जा रहे थे, राह बहुत पथरीली और कंटीली थी कि यकायक श्री राम के चरणों में कांटा चुभ गया। श्रीराम रूष्ट या क्रोधित नहीं हुए बल्कि हाथ जोड़कर धरती माता से अनुरोध करने लगे बोले- माँ एक विनम्र प्रार्थना है आपसे क्या आप स्वीकार करेंगी? धरती बोली प्रभु प्रार्थना नहीं आज्ञा दीजिये। प्रभु बोले, माँ मेरी बस यही विनती है कि जब भरत मेरी खोज में इस से गुजरे तो आप नरम हो जाना कुछ पल के लिए अपने आँचल के ये पत्थर और कांटे छुपा लेना मुझे कांटा चुभा सो चुभा पर मेरे भरत के पाँव में आघात मत करना। श्री राम को यूँ व्यग्र देखकर धरा दंग रह गई पूछा भगवन धृष्टता क्षमा हो पर क्या भरत आपसे अधिक सुकुमार हैं? जब आप इतनी सहजता से सब सहन कर गए तो क्या कुमार भरत सहन नहीं कर पाँएँगे फिर उनको लेकर आपके चित में ऐसी व्याकुलता क्यों?

श्रीराम बोले नहीं, कृपा नहीं माते आप मेरे कहने का अभिप्राय नहीं समझीं। भरत को यदि कांटा चुभा तो वह उसके पाँव को नहीं उसके हृदय को विदीर्ण कर देगा हृदय विदीर्ण ऐसा क्यों प्रभु धरती माँ जिज्ञासा भरे स्वर में बोली अपनी पीड़ा से नहीं माँ बल्कि यह सोचकर कि इसी कंटीली राह से मेरे भैया राम गुजरे होंगे और ये शूल उनके पगों में भी चुभे होंगे मैया मेरा भरत कल्पना में भी मेरी पीड़ा सहन नहीं कर सकता इसलिए उसकी उपस्थिति में आप कमल पंखुड़ियों सी कोमल बन जाना।

अर्थात् रिश्ते अंदरूनी एहसास, आत्मीय अनुभूति के दम पर ही टिकते हैं। जहाँ गहरी आत्मीयता नहीं, वो रिश्ता शायद नहीं परन्तु दिखावा हो सकता है। इसलिए कहा गया है कि रिश्ते खून से नहीं, परिवार से नहीं, मित्रता से नहीं, व्यवहार से नहीं, बल्कि ... सिर्फ और सिर्फ आत्मीय एहसास से ही बनते ओर निर्वहन किए जाते हैं। जहाँ एहसास ही नहीं, आत्मीयता ही नहीं .. वहाँ अपनापन कहाँ से आएगा।



रमेशचन्द्र खण्डेलवाल

(तूंगा वाले)

राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय खण्डेलवाल
वैश्य महासभा, जयपुर

मो. : 093145 66800

094613 00415

098878 65550

rcgupta101160@gmail.com

- वरिष्ठ उपाध्यक्ष -** RVF प्रदेश वैश्य महासम्मेलन राजस्थान
कार्यकारी अध्यक्ष - (फोर्टी) फेडरेशन ऑफ ट्रेड एण्ड इण्डस्ट्री (राज.)
महामंत्री - श्री बलराम आश्रम ट्रस्ट, नईनाथ धाम, बांसखोह, बस्सी
संरक्षक - मालवीय नगर विकास समिति, मालवीय नगर, जयपुर
आजीवन संरक्षक - श्री बलराम धर्मशाला, तूंगा (बस्सी)
आजीवन ट्रस्टी - खण्डेलाधाम, खण्डेला-सीकर (राज.)
आजीवन ट्रस्टी - घुश्मेश्वर शिवालय, शिवाड़ (राज.)
आजीवन संरक्षक - श्री बजरंग मण्डल, हरिनारायणपुरा (चाकसू)
आजीवन - खण्डेलवाल वैश्य गर्ल्स तकनीकी कॉलेज, वैशाली नगर (जयपुर)



विकास खण्डेलवाल

मो. 93146 02657



अविनाश खण्डेलवाल

मो. 93513 24290



खण्डेलवाल प्रोपर्टीज एण्ड बिल्डर्स

20-बी, 20-सी, आरती नगर, जगतपुरा पुलिया के पास, महल रोड़, जगतपुरा, जयपुर (राज.)-302017

खण्डेलवाल प्रोपर्टीज एण्ड कन्सट्रक्शन

दु.नं. 34, शिवशक्ति नगर-बी, मॉडल टाउन, जगतपुरा रोड़, जयपुर (राज.)-302017

आर.सी.जी. ग्रुप ऑफ कम्पनीज

दु.नं. 35, प्लॉट नं.1, शिवशक्ति नगर-बी, मॉडल टाउन, जगतपुरा रोड़, जयपुर (राज.)-302017

निवास : ए-31-34, विद्यानगर, जगतपुरा, जयपुर (राज.)- 302017



स्वास्थ्य के लिये 5 सूत्र

■ ओमप्रकाश माठा

जुनुथर

01 स्वास्थ्य के लिये पहला सूत्र है- संवेगो को संतुलित करना, अनुशासित करना। हम इस संदर्भ में देखें-धर्म का पहला सूत्र क्या है? आचार्यों ने बार-बार कहा 'कषाय मुक्ति: किलमुक्ति रेव' -कषाय से मुक्ति ही मुक्ति हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ, घृणा, ईर्ष्या-द्वेष, काम वासना ये जितने संवेग हैं, इनसे मुक्त होने का नाम ही मुक्ति हैं। जो स्वास्थ्य का भी सूत्र हैं। वही धर्म का सूत्र हैं। जो धर्म का सूत्र है, वही स्वास्थ्य का सूत्र है। यदि आप स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से विचार करें, तो आपको धर्म पर आना होगा। और धर्म की दृष्टि पर विचार करें तो स्वास्थ्य पर आना ही होगा। स्वास्थ्य और धर्म जिस बिन्दु पर आकर मिलते हैं, वह बिन्दु है संवेग।

आज के चिकित्सा विज्ञानी और मनोचिकित्सक भी कुछ भ्रान्ति में हैं। वे लोग मानसिक तनाव को ज्यादा महत्व देते हैं, मानसिक बीमारियों को ज्यादा महत्व देते हैं। यह बात सही नहीं है। बीमारी का मूल कारण जितना भावात्मक परिस्थितियों पर अथवा इमोशन है, उतना मानसिक या मेंटल प्रॉब्लम नहीं है। यह भावात्मक समस्या मानसिक-मानसिक समस्या सके कहीं ज्यादा भयंकर है।

वस्तुतः मानसिक समस्यायें भावात्मक समस्याओं से ही पैदा

होती हैं। हमारे भाव जब मन पर उतरते हैं, मनोभाव बनते हैं तब वे समस्यायें पैदा करते हैं।

प्रेक्षाध्यान में इस बात को पकड़ा गया-सबसे पहले हम उपाधि की चिकित्सा करें, कषाय की चिकित्सा करें। अगर इनकी चिकित्सा होती है, तो मानसिक चिकित्सा अपने आप हो जायेगी।

02 स्वास्थ्य का दूसरा बिन्दु है : मादक द्रव्यों से बचना। आज बहुत सारी बीमारियां नशे की आदत के कारण हो रही हैं लोग इसके दुष्परिणाम को जानते हैं फिर भी नशा करते हैं।

03 स्वास्थ्य का तीसरा बिन्दु है- इंद्रियों की उच्छृंखलता पर नियंत्रण। आज का युग इंद्रियों की उच्छृंखलता का युग है इंद्रिय-संयम को आज पुराने जमाने की बात कहा जा रहा है। आज की उन्मुक्तता की सर्वत्र चर्चा हो रही है। देश मुक्त हो, इतना ही नहीं, हर व्यक्ति मुक्त हो ऐसी बात कही जा रही है। मुक्त यौनाचार की हिमाकत हो रही है। पश्चिमी देशों ने वैज्ञानिक प्रगति तो बहुत की है किन्तु इंद्रिय संयम की अवहेलना भी उसी अनुपात में की है। आज इसके परिणाम सामने आ रहे हैं। भारत में उतनी भयंकर बीमारियां आज प्रचलित नहीं हो पाई हैं जिनती पश्चिमी देशों में हैं।

04 स्वास्थ्य का चौथा बिन्दु है : आहार। पुराने जमाने की कहावत थी 'जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन'। आज इसकी बड़ी वैज्ञानिक व्याख्यायें हुई हैं। व्यक्ति जैसा आहार करता है वैसा ही उसके मस्तिष्क में न्यूरोट्रांसमीटर बनता है। और जैसा न्यूरोट्रांसमीटर बनता है, वैसा ही उसका व्यवहार और आचरण होता है। आहार के अतिविक से शरीर, मन और आत्मा तीनों समानरूप से प्रभावित होते हैं।

05 स्वास्थ्य का पांचवा बिन्दु है : श्रम, जो व्यक्ति उचित श्रम नहीं करता, वह कभी स्वास्थ्य नहीं रह सकता। श्रम न करना बड़प्पन की निशानी मान ली गई है। बड़ा आदमी श्रम क्या करेगा? क्यों करेगा? झाड़ू लगाना, पानी भरना-ये सब तो छोटे आदमी के काम हैं। एक समय था, महिलायें अपने घर में ही आटा पीसा करती थी, कूड़े से पानी भर लाती थी, घर की पूरी सफाई करती थी। उन्हें इस काम में बहुत श्रम करना पड़ता था किन्तु इसका परिणाम यह होता कि घर में कभी डॉक्टर बुलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

हमारी प्रत्येक कोशिका को रक्त की जरूरत होती है। और रक्त श्रम के बिना पहुंचता नहीं। क्या कभी आसन करते हैं। व्यायाम करते हैं। प्राणायाम करते हैं। नहीं शायद आप इसे जरूरी नहीं मानते। आसन और व्यायाम के बिना शरीर को उचित मात्रा में रक्त उपलब्ध नहीं होता है। हर अवयव तक रक्त नहीं पहुंच पाता। आसन-व्यायाम और प्राणायाम ये तीनों शरीर को स्वस्थ रखने की अनिवार्य अपेक्षाएं हैं। श्रम और व्यायाम ये शरीर में नई ताजगी भरते हैं। जो स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होगा उसे धर्म के प्रति जागरूक होना ही होगा।



अखिल भारतवर्षीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा

गंगा मन्दिर, स्टोशन रोड, जयपुर- 302006

With Best Compliments From

विजय खण्डेलवाल, कटक

मुख्य कार्यकारी अध्यक्ष
अ.भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा

मुख्य कार्यकारी अध्यक्ष : अखिल भारतवर्षीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा, जयपुर

अध्यक्ष : कटक मारवाडी समाज, कटक

मुख्य संरक्षक : अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन

चेयरमेन : वेसबॅल फेडरेशन, उडीशा

सचिव एवं ट्रस्टी : महाराजा अग्रसेन भवन, गीताज्ञान मन्दिर, कटक

ट्रस्टी : श्री खण्डेलवाल वैश्य एजुकेशनल ट्रस्ट (रजि.) जयपुर

ट्रस्टी : खण्डेलवाल सेवा सदन, मथुरा

ट्रस्टी : नंदगांव बृद्ध गो सेवा आश्रम, मंगराजपुर, कटक

ट्रस्टी : महात्मा गांधी -मदर टेरेसा चेरिटेबिल ट्रस्ट, कटक

ट्रस्टी : लॉयन भवन भुवनेश्वर

कार्यकारी सदस्य : खण्डेला धाम, खण्डेला, राजस्थान



Business

KHANDELWAL STEEL & PIPES

614, BOMIKHAL, CUTTACK PURI ROAD, BHUBANESHWAR -751010 (ODISHA)

Ph. : 0674-2570466, 2573596, Fax : (0674) 2572347

Mob. : +91 - 9437075750 / 9861055750

E-mail : vijay@kspipes.com, vkctc@yahoo.com, Web: www.kspipe.com

REAL ESTATE

FILM PRODUCER & DISTRIBUTOR

WAREHOUSE

Blank Page

Blank Page

"Smile"

is the Best Credit Card.
Bcoz it is Accepted World Wide,
Auto Reload,
Unlimited Usages,
No Payment,
at all makes every 1 Happy.
So keep Smiling.

Sushil Kumar Gupta

Blank Page

Blank Page

**Blank
Page**

**Blank
Page**

Blank Page

खण्डेलवाल महासभा पत्रिका

प्रगतिशील राष्ट्रीय हिंदी मासिक समाचार पत्र

www.khandelwalmahasabha.co.in

अखिल भारतवर्षीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा, जयपुर का मुख पत्र

गंगा मन्दिर, स्टेशन रोड, जयपुर-302006

**खण्डेलवाल महासभा पत्रिका हेतु शुभकामना संदेश,
व्यक्तिगत विज्ञापन तथा व्यवसायिक विज्ञापन आमंत्रित**

विज्ञापन का साईज	मासिक दर प्रति अंक
कवर (टाइटल) का सैकिण्ड पेज पूरा रंगीन	15,000 रु. मासिक
कवर (टाइटल) का थर्ड पेज पूरा रंगीन	15,000 रु. मासिक
कवर (टाइटल) का अन्तिम पेज पूरा रंगीन	21,000 रु. मासिक
पूरा पेज रंगीन	9,000 रु. मासिक
आधा पेज रंगीन	5,100 रु. मासिक
चौथाई पेज रंगीन	3,100 रु. मासिक
स्ट्रीप साईज (1" चौड़ाई)	500 रु. प्रति पेज अथवा फुल साईज विज्ञापन को छोड़कर शेष सभी पेजों के लिये कुल 21000 रु. प्रति अंक

नोट : एक वर्ष का विज्ञापन प्राप्त होने पर 10 प्रतिशत की रियायत दी जावेगी।

विज्ञापन राशि का चैक 'खण्डेलवाल वैश्य महासभा' के नाम बनावे अथवा बैंक एकाउन्ट में जमा करवाकर कार्यालय को सूचित करें।

सादर निवेदन :

सम्पादक मण्डल का महासभा के समस्त पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों एवं महासमिति सदस्यों एवं समाज बन्धुओं से आग्रह है कि आप अपने व्यापार, व्यवसाय का विज्ञापन महासभा पत्रिका के माध्यम से करवाये और अपने क्षेत्र के अन्य समाज बन्धु जो महासभा पत्रिका में विज्ञापन दे सकते हैं उन्हें भी इसके लिये प्रेरित करें।

महासभा पत्रिका में आपके विज्ञापन प्रकाशित होने से आपके व्यापार-व्यवसाय की उन्नति के साथ-साथ पत्रिका के प्रकाशन को आर्थिक सम्बल मिलेगा और आपसे प्राप्त विज्ञापन राशि का उपयोग महासभा के प्रमुख छात्रवृत्ति व महिला कल्याण सहायता कार्यक्रम को पूरा करने में भी सहयोगी रहेगा। महासभा के पुनीत सहायता कार्यक्रमों में आपकी सहभागिता होगी जो आपको अन्तःकरण में दिव्य शान्ति व सुख का अहसास करायेगी। इस प्रकार महासभा पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करवाकर आप दोहरा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

धन्यवाद सहित।

नरेश रावत, दिल्ली

प्रधानमंत्री

खण्डेलवाल वैश्य महासभा, जयपुर

रामनिरन्जन खण्डेलवाल

प्रधान सम्पादक

खण्डेलवाल महासभा पत्रिका

खण्डेलवाल महासभा पत्रिका

प्रकाशन तिथि 21 मार्च, 2020, पृष्ठ संख्या 52, प्रेषण : प्रत्येक माह दिनांक 25 को सी.एस.ओ. गांधी नगर, जयपुर से
डाक पंजीयन संख्या - जयपुर सिटी/415/2018-20 RNI No. : 72410/99

अखिल भारतीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा

सन्त सुन्दरदास मार्ग, शास्त्री नगर, जयपुर-302016, फोन : 0141-2303593

वातानुकूलित विशाल भवन एवं कमरे बुकिंग हेतु संपर्क करें



अखिल भारतवर्षीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा भवन
सन्त सुन्दरदास मार्ग, शास्त्री नगर, जयपुर-16, फोन: 0141-2303593



• खण्डेलवाल समाज बंधुओं को विशेष रियायत। • ठहरने हेतु 27 वैल फर्नीशड ए.सी. रुम। • 350 सीटों युक्त सर्वसुविधायुक्त, वातानुकूलित ऑडिटोरियम (ए.आर.जी. ऑडिटोरियम) • कॉन्फ्रेंस हॉल • सर्व-सुविधाओं युक्त दो वातानुकूलित विशाल बैनक्वेट हॉल एवं ओपन एरिया। वर पक्ष एवं वधु पक्ष दोनों के लिये अलग-अलग ठहरने की एवं कार्यक्रम करने की समुचित व्यवस्था। • पार्किंग, लिफ्ट, कॉन्फ्रेंस सेमिनार, धार्मिक कथा-प्रवचन, स्कूलों के वार्षिक उत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विवाह, जन्मदिन समारोह, विवाह की रजत जयंती/स्वर्ण जयंती एवं अन्य मांगलिक कार्यक्रमों हेतु महासभा भवन के बेसमेंट हॉल व कमरे बुक करवाए जा सकते हैं।

इच्छुक बन्धु/बहिन फोन नं. : 0141-2303593 पर संपर्क करें

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/415/2018-20

खण्डेलवाल महासभा पत्रिका

गंगा मंदिर, स्टेशन रोड, जयपुर-302006

कृपया वितरण न होने पर उपरोक्त पते पर लौटाएं

श्री

.....

.....

.....

मुद्रक, प्रकाशक, स्वामी : खण्डेलवाल वैश्य महासभा, जयपुर की ओर से भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, जयपुर से
मुद्रित कराकर गंगा मंदिर, स्टेशन रोड, जयपुर से प्रकाशित किया। संपादक : रामनिरंजन खण्डेलवाल, जयपुर